श्रीमते रामानुजाय नमः

॥ श्री वादिभीकर महागुरवे नमः ॥

॥ श्रीः ॥



श्रीवैष्णवकृत्यदर्पण

श्री १००८ श्रीमद्वेदमार्गप्रतिष्ठापनाचार्योभयवेदान्तप्रवर्तकाचार्य
श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यसत्सम्प्रदायाचार्य जगद्गुरु
भगवदनन्तपादीय १००८ श्रीमद्विष्वक्सेनाचार्य
श्रीत्रिदण्डिस्वामिचरणाश्रित

श्री सुदर्शन ब्रह्मचारी
"श्रीपादसेवक"
द्वारा संकलित

रामदेवाचार्य, वेदाचार्य, पोष्टाचार्य
उपप्रधानाध्यापक राजकीय संस्कृतोच्चविद्यालय, छपरा
द्वारा-संशोधित

शाहाबाद (आरा) मण्डलान्तर्गत अतमी पत्रालयक
महादेव ग्राम वास्तव्य
श्री रघुनाथ तिवारी
द्वारा प्रकाशित

द्वितीयावृत्ति ३००० | संवत २०२८ | मूल्य ७५ पैसे

श्रीमते रामानुजाय नमः । श्रीवादिभीकर महागुरवे नमः

आमुख

यच्छिष्यसिंहस्मरणं प्रतिवादिगजार्तिदम् ।
तं वन्दे योगिसंसेव्यं विष्वक्सेनं महामुनिम् ॥

प्रिय पाठको !

परब्रह्म परमात्मा सच्चिदानन्द श्रीमन्नारायण भगवान की महती अनुकम्पा से आज इस वैष्णवकृत्यदर्पण ग्रन्थ के द्वितीय संस्करण का संशोधन करने का अवसर मुझे मिला। इस ग्रन्थ का संकलन पूज्यपाद प्रातःस्मरणीय १००८ श्रीत्रिदण्डिस्वामीजी महाराज के कृपापात्र श्रीपादसेवक श्री ब्रह्मचारी सुदर्शनस्वामीजी ने किया है।

आप श्रीत्रिदण्डिस्वामीजी महाराज के कृपापात्रों में बड़े ही योग्यमूर्ति हैं, विशेष आपके लिये क्या कहना है श्रीस्वामीजी महाराज की कृपा से "गुरुमुखमनधीत्य प्राह वेदानशेषान्" को चरितार्थ कर रहे हैं।

इस द्वितीय संस्करण में बहुत अधिक विषय रखा गया है जो विषय सूची से अवगत होगा, जिससे वैष्णव जगत् का कल्याण हो। इस संस्करण के छापने में शाहाबाद (आरा) मण्डलान्तर्गत अतमी पत्रालयक महादेव ग्रामवासी श्री रङ्गनाथ तिवारी ने १०००) रुपये का सहयोग प्रदान किया है। इसका मूल्य लागत मात्र ७५ पैसे रखे गये हैं जिससे भविष्य में पुनः तृतीय संस्करण छप सके।

छपरा मण्डलवासी श्रीस्वामीजी महाराज के कृपापात्र ब्राह्मणभक्त, आचार्यनिष्ठ श्री बाबू कपिलदेव सिंह, मौना बाजार

गोलावाले ने बड़ी तत्परता से इस पुस्तक के छपने में अग्रिम रुपये देते रहे उन्हें धन्यवाद है।

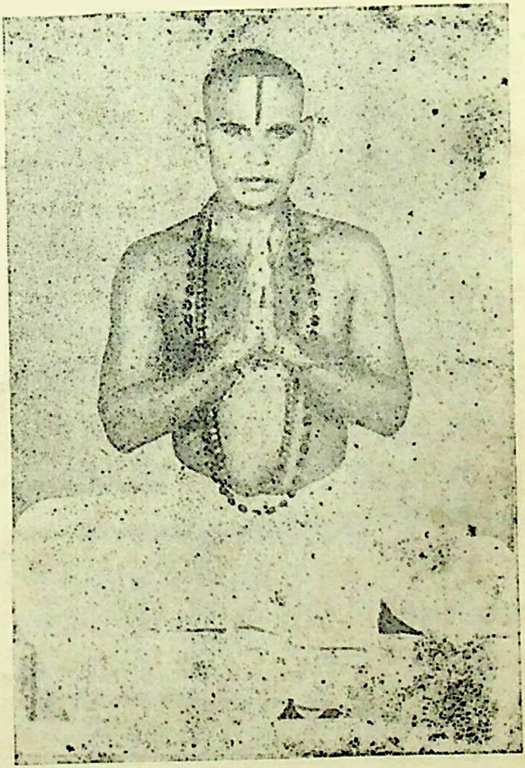
सिद्धं सत्सम्प्रदाये स्थिरधियमनघं श्रोत्रियं ब्रह्मनिष्ठम् ।
सत्वस्थं सत्यवाचं समयनियतया साधुवृत्या समेतम् ॥
दम्भासूया विमुक्तं जितविषयगणं दीर्घबन्धुं दयालुम् ।
स्खालित्ये शासितारं स्वपरहितपरं देशिकं भूष्णुरिच्छेत् ॥

इस श्लोकोक्त लक्षणवाले पूज्यपाद प्रातःस्मरणीय श्रीत्रिदण्डिस्वामीजी महाराज के शरण जो नहीं गया उसका जीवन व्यर्थ है। श्रीस्वामीजी महाराज की अहोरात्रचर्या ग्रन्थ के अन्त में दी गयी है, विज्ञजन देखें। बहुत-से महात्मा विचार करते हैं कि वैष्णवता का प्रचार अधिक हो रहा है, हमलोग भी अपना शिष्य बनावें परन्तु ध्यान देने की बात है, प्रथम तो शिखासूत्रत्यागी संन्यासी से शिष्य होने का निषेध आया है दूसरा उपर्युक्त लक्षण किसी में संघटित नहीं होता पुनः आचार्य बनने का उन्हें सौभाग्य कैसे, इसके विषय में "पञ्चसंस्कारपद्धति" देखें।

श्री रङ्गनाथ तिवारी को विशेषरूप से धन्यवाद देता हूँ जिनके उत्साह और भक्ति तथा द्रव्य से इस ग्रन्थ का प्रकाशन हुआ है।

अन्त में पूज्यपाद प्रातःस्मरणीय श्री स्वामीजी महाराज के चरणों में नतमस्तक हो अपने वक्तव्य को समाप्त करता हूँ।

श्री स्वामिपादाब्जभृङ्ग
रामदेवाचार्य (रामदेव शुक्ल)
वेदाचार्य, पोष्टाचार्य
उपप्रधानाध्यापक
राजकीय संस्कृतोच्चविद्यालय, छपरा

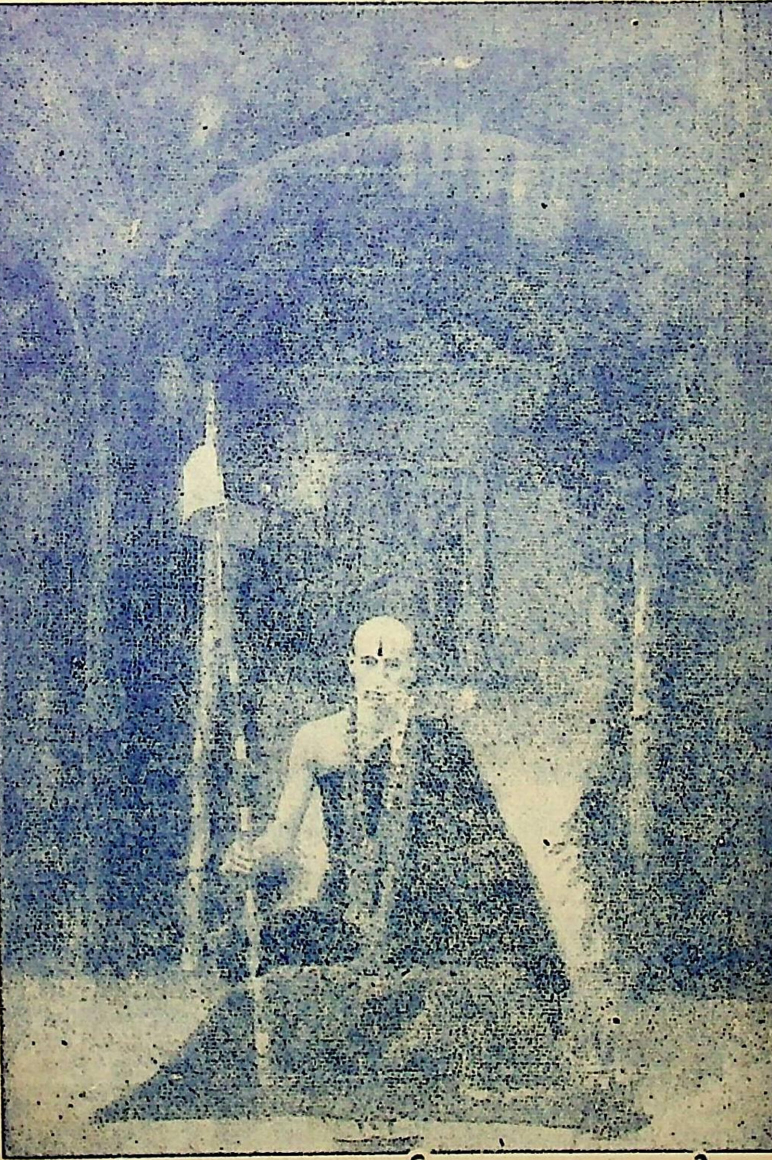


श्री १०८ श्री पादसेवक, ब्रह्मचारी,

श्री सुदर्शन स्वामी जी

महाराज

विषय सूची



जगदाचार्य

[illegible]

॥ अथ सत्सङ्गपद्यद्वयम् ॥

सत्संगाद्भवनिःस्पृहो गुरुमुखाच्छ्रीशं प्रपद्यात्मवान् ।
प्रारब्धं परिभुज्य कर्मसकलं प्रक्षीणकर्मान्तरः ॥
न्यासादेव निरंकुशेश्वरदयानिर्लूनमायान्वयो— ।
हार्दानुग्रहलब्धमध्यधमनीद्वाराद्बहिर्निर्गतः ॥१॥
मुक्तोऽर्चिर्दिनपूर्वपक्षषडुदङ्मासाब्दवातांशुमद् ।
ग्लौविद्युद्वरुणेन्द्रधातृमहितः सीमान्तसिन्ध्वाप्लुतः ।
श्रीवैकुण्ठमुपेत्य नित्यमजडं तस्मिन्परब्रह्मणः ।
सायुज्यं समवाप्य नन्दति समं तेनैव धन्यः पुमान् ॥२॥

॥ हस्तदर्शनम् ॥

कराग्रे वसते लक्ष्मीः करमध्ये सरस्वती ।
करमूले तु गोविन्दः प्रभाते करदर्शनम् ॥३॥

॥ गुरु महिमा ॥

अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम् ।
तत्पदं दर्शितं येन न तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥१॥
गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरुरेव परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः ॥२॥

अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जनशलाकया ।
चक्षुरुन्मिलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥३॥

॥ पृथ्वी पर पैर रखने का मन्त्र ॥

समुद्रवसने देवि ! पर्वतस्तनमण्डले ।
विष्णु पत्नि ! नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्व मे ॥१॥

॥ शौच होने का मन्त्र ॥

देवता ऋषयः सर्वे पिशाचोरगराक्षसाः ।
इतो गच्छन्तु भूतानि मलमूत्रं करोम्यहम् ॥१॥

॥ स्नान करने का मन्त्र ॥

कावेरी विरजातोयं वैकुण्ठं रंगमन्दिरम् ।
परवासुदेवो रंगेशः प्रत्यक्षं परमं पदम् ॥१॥

—※ अथ सन्ध्योपासन विधि ※—

॥ शरीर शुद्धि मन्त्र ॥

ओं अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपिवा ।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥१॥

॥ शिखा बाँधने का मन्त्र ॥

ओं भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि ।
धियो यो नः प्रचोदयात् ॥२॥

॥ यज्ञोपवीत धारण मन्त्र ॥

यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात् ।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः ॥१॥

॥ आसन शुद्धि मन्त्र ॥

ओं पृथ्वि ! त्वया धृता लोका देवि ! त्वं विष्णुना धृता ।
त्वं च धारय माँ देवि ! पवित्रं कुरु चासनम् ॥२॥

—॥ अथ तिलकधारण विधि ॥—

स्नान करने के बाद वस्त्र धारण करके शुद्धासन पर पूर्वाभिमुख या उत्तराभिमुख सिद्धासन से बैठकर अपने दाहिने भाग में गंगाजल से भरा हुआ जलपात्र को रखे और सफेद श्रीरंग आदिक दिव्य देशों की मिट्टी से बना हुआ चक्राङ्कित पाशा को और श्रीचूर्ण के पात्र को तिलक पेटी के ऊपर सामने रखे । इसके बाद जलपात्र से थोड़ा जल ताम्र या रजत के गोकर्णी में रखे और ताम्र या रजत के उद्धरणी को भी जलपूरित गोकर्णी में रख दे तथा एक निर्मल दर्पण भी सामने तिलक पेटी पर रखे । इसके बाद निम्नलिखित स्थानों पर इस प्रकार द्वादश ऊर्ध्वपुण्ड्र धारण करे—

ललाटे भुजयुग्मे तु पृष्ठयोः कण्ठकूबरे ।
धारयेदूर्ध्वपुण्ड्रं तु चतुरंगुलमायतः ॥
कुक्षौ तत्पार्श्वयोः प्रोक्तमायतं तु दशांगुलम् ।

वाह्वोर्वक्षस्थले पुण्ड्रमष्टांगुलमुदाहृतम् ॥

(पद्मपु० उत्तरखं० ६ अ० २२५ श्लो० ४६–५०)

ललाट, दाहिना कंधा, बायां कंधा, पीठ, गर्दन, कण्ठ, इन छव स्थानों पर चार-चार अंगुल लम्बा ऊर्ध्वपुण्ड्र धारण करना चाहिये ॥४६॥ और उदर दाहिनी कुक्षि बायीं कुक्षि इन तीन स्थानों पर दश-दश अंगुल लम्बा ऊर्ध्वपुण्ड्र करना चाहिये और हृदय दाहिना वाहुमूल बायां वाहुमूल इन तीनों स्थानों पर आठ-आठ अंगुल लम्बा ऊर्ध्वपुण्ड्र करना चाहिये ॥५०॥

मन्त्र		स्थान	अंगुल प्रमाण
ॐ केशवाय	नमः	ललाट	४
,, नारायणाय	नमः	उदर	१०
,, माधवाय	नमः	वक्षस्थल	८
,, गोविन्दाय	नमः	कण्ठ	४
,, विष्णवे	नमः	दक्षिण उदर	१०
,, मधुसूदनाय	नमः	दक्षिण भुजा	८
,, त्रिविक्रमाय	नमः	दक्षिण कण्ठ	४
,, वामनाय	नमः	वाम उदर	१०
,, श्रीधराय	नमः	वाम भुजा	८
,, हृषीकेशाय	नमः	वाम कण्ठ	४
,, पद्मनाभाय	नमः	पृष्ठ	४
,, दामोदराय	नमः	पृष्ठ कण्ठ	४

श्रीचूर्ण घिसकर धारण करे—

ॐ	श्रियै	नमः	१	ॐ	वररोहायै	नमः	७
,,	अमृतोद्भवायै	नमः	२	,,	हरिवल्लभायै	नमः	८
,,	कमलायै	नमः	३	,,	शार्ङ्गिण्यै	नमः	९
ॐ	चन्द्रसोदर्यै	नमः	४	ॐ	देवदेविकायै	नमः	१०
,,	विष्णुपत्न्यै	नमः	५	,,	लोकसुन्दर्यै	नमः	११
,,	वैष्णव्यै	नमः	६	,,	महालक्ष्म्यै	नमः	१२

तिलकधारण प्रकार—

विष्णुचन्दन पापघ्न विष्णुलोकसमुद्भव ।
चक्राङ्कित नमस्तुभ्यं धारणान्मुक्तिदो भव ॥

(वासु० उ० खं० २)

इस मन्त्र को पढ़कर अञ्जलिमुद्रा बाँधकर नाशा के लिए नमस्कार करे इसके बाद बायें हाथ की हथेली को गोकर्णाकृति बनाकर दाहिने हाथ से गोकर्णी में से उद्धरणी के द्वारा जल को लेकर—

इमं मे गङ्गे यमुने सरस्वति शुतुद्रि स्तोमं सचता परुष्ण्या ।
असिक्न्या मरुद्वृधे वितस्तयाऽऽर्जीकीये शृणुह्या सुषोमया ॥

(ऋग्वे० सं० १० सू० ७५ मंत्र ५)

इस मन्त्र को पढ़ता हुआ बायें हाथ की हथेली में जल छोड़ दे तदनन्तर—

उद्धृतासि वराहेण कृष्णेन शतबाहुना ।

मृत्तिके हर मे पापं यन्मया दुष्कृतं कृतम् ॥
(तैत्तिरीयारण्य० प्रपाठ० १ अनुवा० १ मं० ३०)

इस मन्त्र को पढ़ता हुआ दक्षिण हाथ की अंगुलियों से सफेद मिट्टी के पाशा को ग्रहण करे। इसके बाद—

विष्णोर्नुकं वीर्याणि प्रवोचं यः पार्थिवानि विममे रजांसि ।
यो अस्कभायदुत्तरं सधस्थं विचक्रमाणस्त्रेधोरुगायः ॥
(ऋग्वे० मण्डल १ सूक्त १५४ मं० १)

इस मन्त्र को पढ़कर उस पाशा को वाम हाथ की हथेली पर रगड़े। तदनन्तर—

ओं नमो नारायणाय । (नारायणोप० मं० ४)

इस मन्त्र को अपने दाहिने हाथ के बीचली अंगुली से वाम हाथ की हथेली पर विष्णु चन्दन को रगड़ता हुआ लिखे। तदनन्तर—

अतो देवा अवन्तु नो यतो विष्णुर्विचक्रमे ।
पृथिव्याः सप्तधामभिः ॥ (ऋक्० मंड० १ सूक्त २२ मं० १६)
इस मन्त्र को तथा—

तद्विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः । दिवीव चक्षुराततम् । तद्विप्रासो विपन्यवो जागृवांसः समिन्धते । विष्णोर्यत्परमं पदम् ॥ (ऋ० मंड० १ सूक्त २० मं० २१)
इस मन्त्र को और—

इदं विष्णु विंचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्।
समूढमस्य पांसुरे स्वाहा ॥ (शु० य० अ० ५ मं० १५)

इस मन्त्र को तथा—

विष्णोरराटमसि विष्णोः श्नप्त्रेस्थो विष्णोः स्यूरसि
विष्णोर्ध्रुवोऽसि। वैष्णवमसि विष्णवे त्वा ॥
(शुक्लयजु० अ० ५ मं० २१)

इस मन्त्र को पढ़ता हुआ दाहिने हाथ की हथेली से वाम हाथ की हथेली को ढँककर विष्णु चन्दन को अभिमंत्रित करे। तदनन्तर—

शङ्खचक्रगदापाणे द्वारकानिलयाच्युत।
गोविन्द पुण्डरीकाक्ष रक्ष मां शरणागतम् ॥
(वासुदेवोप० खं० ३)

इस मन्त्र से केशव भगवान का ध्यान करके दाहिने हाथ की मध्यमा अंगुलि से विष्णु चन्दन को लेकर सुन्दर दर्पण में अपने मुख को देखता हुआ—

नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि।
तन्नो विष्णुः प्रचोदयात् ॥
(तैत्तिरीयारण्य० प्रपा० १० अनुवा० १ मं० २८)

इस मन्त्र को पढ़ता हुआ अन्तराल से युक्त सुन्दर अनामिका अंगुली के बराबर मोटा यानी चौड़ा और चार अंगुल लम्बा ऊर्ध्वपुण्ड्र तिलक अपने आचार्य के कथनानुसार

ललाट पर धारण करे। इसके अनन्तर पुनः दक्षिण हाथ की अनामिका अंगुली से सफेद विष्णु चन्दन को लेकर—

नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि।
तन्नो विष्णुः प्रचोदयात्॥

इस मन्त्र को पढ़ता हुआ माधव भगवान का ध्यान करके हृदय में यानी छाती पर अपने आचार्य के कथनानुसार अन्तराल से युक्त अत्यन्त सुन्दर आठ अंगुल लम्बा बद्धमूल वाला ऊर्ध्वपुण्ड्र तिलक धारण करे। तदनन्तर पुनः दाहिने हाथ की अनामिका अंगुली से सफेद विष्णु चन्दन को वाम हथेली से लेकर—

नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि।
तन्नो विष्णुः प्रचोदयात्॥

(तैत्तिरीय रण्य० प्रपा० १० अनु० १ मं० २८)

इस मन्त्र को पढ़ता हुआ गोविन्द भगवान का ध्यान करके कण्ठ पर अपने आचार्य के कथनानुसार अन्तराल से युक्त अति सुन्दर बद्धमूल वाला चार अंगुल लम्बा दर्पण को देखकर ऊर्ध्वपुण्ड्र तिलक धारण करे। तदनन्तर पुनः दाहिने हाथ की अनामिका अंगुली से सफेद विष्णु चन्दन को वाम हथेली से लेकर बायें हाथ की मध्यमा अंगुली पर रखकर—

नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि।
तन्नो विष्णुः प्रचोदयात्॥

इस मन्त्र को पढ़ता हुआ मधुसूदन भगवान का ध्यान करके अपने आचार्य के कथनानुसार दाहिने भुजा के मूल पर अन्तराल से युक्त अत्यन्त सुन्दर बद्धमूल वाला आठ अंगुल लम्बा ऊर्ध्वपुण्ड्र तिलक धारण करे। तदनन्तर पुनः दाहिने हाथ की अनामिका अंगुली से सफेद विष्णुचन्दन को बायें हथेली से लेकर—

नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि ।

तन्नो विष्णुः प्रचोदयात् ॥

(तै० प्रपा० १० अनु० १ मं० २८)

इस मन्त्र को पढ़ता हुआ श्रीधर भगवान का ध्यान करके अपने आचार्य के कथनानुसार बायें भुजा के मूल पर अन्तराल से युक्त अत्यन्त सुन्दर बद्धमूल वाला आठ अंखुल लम्बा ऊर्ध्वपुण्ड्र तिलक धारण करे। शेष स्थानों पर भी उपर्युक्त प्रकार से आचार्य के कथनानुसार तिलक धारण करे। इसके बाद वाम हथेली के सफेद मिट्टी को दाहिना हाथ से थोड़ा जल देके धोवे और उस हस्त प्रक्षालित जल को वासुदेव भगवान का ध्यान करके अपने मस्तक पर रखे। तदनन्तर—

गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् ।

ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥

(तै० प्र० १० अनु० १ मं० ३४)

इस मन्त्र को पढ़कर दाहिने हाथ से श्रीचूर्ण के पात्र को लेकर बायें हाथ की हथेली पर श्रीचूर्ण रखे। तदनन्तर—

शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये ।
शंयोरभिस्त्रवन्तु नः ॥ (अथर्ववेद)

इस मन्त्र को पढ़कर गोकर्णी में से उद्धरणी के द्वारा बायें हथेली में श्रीचूर्ण के ठीक भींजने पर थोड़ा जल छोड़ दे। इसके बाद—

श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुम्म इषाण सर्व-लोकम्म इषाण ॥ (शु० य० अ० ३१ मं० २२)

इस मन्त्र को पढ़कर श्रीचूर्ण को बायें हथेली पर दाहिने हाथ की अनामिका अंगुलि से रगड़े। तदनन्तर पुनः—

श्रीमन्नारायणचरणौ शरणं प्रपद्ये ।
श्रीमते नारायणाय नमः ॥

(त्रिपाद्विभूतिमहानारायणो० अ० ७)

इस मन्त्र को अपने दाहिने हाथ की अनामिका अंगुलि से बाम हाथ की हथेली पर श्रीचूर्ण को रगड़ता हुआ लिखे। तदनन्तर—

कांसोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम् । पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥

इस मन्त्र को पढ़ता हुआ दाहिने हाथ की हथेली से बायें हाथ की हथेली को ढँककर श्रीचूर्ण को अभिमंत्रित करे तदनंतर

श्रीदेवी का ध्यान करके दाहिने हाथ की मध्यमा अंगुलि से अरुण सिक्त श्रीचूर्ण को लेकर सुन्दर दर्पण में अपने मुख को देखता हुआ—

महालक्ष्म्यै च विद्महे विष्णुपत्न्यै च धीमहि।
तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात् ॥ (लक्ष्मीसूक्त मं० ६)

इस मन्त्र को पढ़कर दीप शिखा के समान दोनों सफेद ऊर्ध्व रेखाओं के मध्य में अत्यन्त सुन्दर अन्तरालयुक्त श्रीचूर्ण को ललाट पर चार अंगुल लम्बा धारण करे। इसके अनन्तर पुनः दक्षिण हाथ की अनामिका अंगुलि से अरुणसिक्त श्रीचूर्ण को लेकर—

महालक्ष्म्यै च विद्महे विष्णुपत्न्यै च धीमहि।
तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात् ॥

इस मन्त्र को पढ़कर भूदेवी का ध्यान करके दीप शिखा के समान दोनों सफेद ऊर्ध्व रेखाओं के मध्य में अत्यन्त सुन्दर अन्तरालयुक्त श्रीचूर्ण को हृदय में यानी छाती पर आठ अंगुल लम्बा धारण करे। तदनन्तर पुनः दक्षिण हाथ की अनामिका अंगुलि से सिक्त श्रीचूर्ण को लेकर—

महालक्ष्म्यै च विद्महे विष्णुपत्न्यै च धीमहि।
तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात् ॥

इस मन्त्र को पढ़कर और नीलादेवी का ध्यान करके दोनों सफ़ेद ऊर्ध्व रेखाओं के मध्य में अत्यन्त सुन्दर अन्तरालयुक्त दीप शिखा के समान श्रीचूर्ण को दर्पण से देखकर कण्ठ पर

चार अंगुल लम्बा धारण करे। तदनंतर पुनः दाहिने हाथ की अनामिका अंगुलि से अरुणासिक्त श्रीचूर्ण को वाम हथेली से लेकर वाम हाथ की मध्यमा अंगुलि पर रखकर—

महालक्ष्म्यै च विद्महे विष्णुपत्न्यै च धीमहि।
तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात्॥

इस मन्त्र को पढ़कर और सीता देवी का ध्यान करके दोनों सफेद ऊर्ध्व रेखाओं के मध्य में अत्यंत सुन्दर अन्तराल युक्त दीप शिखा के समान श्रीचूर्ण को दाहिने वाहु के मूल पर आठ अंगुल लम्बा धारण करे। तदनंतर पुनः दाहिने हाथ की अनामिका अंगुलि से अरुणासिक्त श्रीचूर्ण को वाम हथेली से लेकर—

महालक्ष्म्यै च विद्महे विष्णुपत्न्यै च धीमहि।
तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात्॥

इस मन्त्र को पढ़कर और रुक्मिणी देवी का ध्यान करके दोनों सफेद ऊर्ध्व रेखाओं के मध्य में अत्यंत सुन्दर अंतराल युक्त दीप शिखा के समान श्रीचूर्ण को वाम वाहु के मूल पर आठ अंगुल लम्बा धारण करे। इसी प्रकार आचार्य के द्वारा उपदिष्ट विधि से शेष स्थानों पर भी श्रीचूर्ण धारण करे। इसके बाद वाम हथेली के श्रीचूर्ण को दाहिने हाथ से उद्धरणी के द्वारा थोड़ा जल देकर धोवे और उस हस्त प्रक्षालित जल को महालक्ष्मी देवी का ध्यान करके अपने मस्तक पर रखे।

॥ संकल्प करने का मन्त्र ॥

ओं भगवदाज्ञया भगवत्कैङ्कर्य रूपं ।
सन्ध्यावन्दनकर्माहं करिष्ये ॥१॥

॥ आचमन करने का मन्त्र ॥

ओम् अच्युताय नमः । ओम् अनन्ताय नमः ।
ओम् गोविन्दाय नमः ।

॥ अंगन्यास करने का मन्त्र ॥

ओं केशनाय नमः (इससे अँगूठा से दक्षिण कपोल स्पर्श करें)
ओं नारायणाय नमः (इससे अंगूठे से वाम कपोल स्पर्श करें)
ओं माधवाय नमः (अनामिका समेत अँगूठासे दक्षिण स्पर्श करें)
ओं गोविन्दाय नमः (अनामिकासमेतअंगूठासेवामनेत्रस्पर्शकरें)
ओं विष्णवे नमः (तर्जनीसमेतअंगूठासेदक्षिणनासिकास्पर्शकरें)
ओं मधुसुदनाय नमः („ „ वाम „)
ओं त्रिविक्रमाय नमः (कनिष्ठकासमेतअंगूठासेदक्षिणकर्णस्पर्शकरें)
ओं वामनाय नमः (कनिष्ठका समेत वाम कर्ण स्पर्श करें)
ओं श्रीधराय नमः (मध्यमासमेतअंगूठासेदक्षिणभुजास्पर्शकरें)
ओं हृषीकेशाय नमः („ „ „ वाम „
ओं पद्मनाभाय नमः (चारो अंगुलियों से हृदय स्पर्श करे)
ओं दामोदराय नमः (चारो अंगुलियों से मस्तक स्पर्श करें)

॥ प्राणायाम करने का मन्त्र ॥

ओं भूः ओं भुवः ओं स्वः ओं महः ओं जनः ओं तपः ओं सत्यं ओं तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् । ओंम् आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम् ॥

॥ प्रातःकाल आचमन करने का मन्त्र ॥

ओं सूर्यश्च मा मन्युश्च मन्युपतयश्च मन्युकृतेभ्यः । पापेभ्यो रक्षन्ताम् । यद्रात्र्या पापमकार्षं मनसा वाचा-हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना रात्रिस्तदवलुम्पतु यत्किञ्चद्दुरितं मयि इदमहमापोऽमृतयोनौ सूर्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा ॥

॥ मध्याह्न काल में आचमन करने का मन्त्र ॥

ओं आपः पुनन्तु पृथिवीं पृथिवी पूता पुनातु माम्
पुनन्तु ब्रह्मणस्पतिर्ब्रह्मपूता पुनातु मां ॥
यदुच्छिष्टमभोज्यं च यद्वा दुश्चरितं मम ।
सर्वं पुनन्तु मामापोऽसतां च प्रतिग्रह गूँ स्वाहा ॥

॥ सन्ध्या काल का आचमन करने का मन्त्र ॥

ओं अग्निश्च मा मन्युश्च मन्युपतयश्च मन्युकृतेभ्यः पापेभ्यो रक्षन्ताम् । यदह्ना पापमकार्षम् । मनसा वाचा

हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना अहस्तदवलुंपतु। यत्किञ्चिद्दुरितं मयि। इदमहमापोऽमृतयोनौ सत्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा।

॥ मार्जन करने का मन्त्र ॥

ओं आपो हिष्ठा मयोभुवः। १ ओं तान ऊर्जे दधातन।२
ओं महे रणाय चक्षसे। ३ ओं यो वः शिवतमो रसः।४
ओं तस्य भाजयते हनः। ५ ओं उशती रिव मातरः।६
ओं तस्माऽअरंगमामवः। ७ ओं यस्य क्षयाय जिन्वथ।८
ओं आपो जन यथाचनः॥

॥ शिर पर जल छिड़कने का मन्त्र ॥

ओं दुपदादिव मुमुचानः स्विन्नः स्नातो मलादिव।
पूतं पवित्रेणेवाज्यमापः शुन्धन्तु मैनसः॥

॥ अघमर्षणा करने का मन्त्र ॥

ओं ऋतञ्च सत्यश्चाभीद्धात्तपसोध्यजायत।
ततो रात्र्यजायत ततः समुद्रो अर्णवः। समुद्रा दर्णावादधि संवत्सरो अजायत अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी॥ सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथा पूर्वमकल्पयत्। दिवं च पृथिवीं चान्तरिक्षमथो स्वः॥

॥ सूर्यार्घ्य देने का मन्त्र ॥

ओं भूर्भुवः स्वस्तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात् ॥

॥ तर्पण करने का मन्त्र ॥

ओं केशवं तर्पयामि १ ओं नारायणं तर्पयामि २ ओं माधवं तर्पयामि ३ ओं गोविन्दं तर्पयामि ४ ओं विष्णुं तर्पयामि ५ ओं मधुसूदनं तर्पयामि ६ ओं त्रिविक्रमं तर्पयामि ७ ओं वामनं तर्पयामि ८ ओं श्रीधरं तर्पयामि ९ ओं हृषीकेशं तर्पयामि १० ओं पद्मनाभं तर्पयामि ११ ओं दामोदरं तर्पयामि १२ ॥

॥ गायत्री देवी का आवाहन करने का मन्त्र ॥

ओं आयातु वरदा देवी अक्षरं ब्रह्मसंमितं गायत्री छंदसां मात इदं ब्रह्म जुषस्व न- ॥

ओं श्वेतवर्णा समुद्दिष्टा कौशेयवसना तथा श्वेतैर्विलेपनैः पुष्पैरलंकारैश्च भूषिता । आदित्यमण्डलस्था च ब्रह्मलोक गताथ वा । अक्षसूत्रधरा देवी पद्मासनगता शुभा ॥

ओं तेजोसि शुक्रमस्यमृतमसि धामनामासि प्रियं देवनामनाधृष्टं देवयजनमसि ॥

ओं गायत्रस्येकपदी द्विपदी त्रिपदी चतुष्पद्य पदसि न हि पद्यसे। नमस्ते तुरीयाय दर्शताय पदाय परोरजसेऽसावदोमा प्रापत॥

॥ गायत्री देवी का विसर्जन करने का मन्त्र॥

उत्तमे शिखरे देवि भूम्यां पर्वतमूर्धनि।
ब्राह्मणेभ्योऽभ्यनुज्ञाता गच्छ देवि यथा सुखम्॥

॥ सूर्योपस्थान करने का मन्त्र॥

ओं उद्वयं तमसस्परिस्वः पश्यन्त उत्तरम्।
देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम्॥

ओं उदुत्यं जातवेदसन्देवं वहन्ति केतवः दृशे विश्वाय सूर्यम्॥

ओं चित्रं देवानामुदगादनीकञ्चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याऽग्नेः। आप्राद्यावापृथिवी अन्तरिक्ष ठँ सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च।

ओं तच्चक्षुर्देवहितम्पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्।
पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शत ठँ शृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः।
शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात्॥

॥ ध्यान करने का मन्त्र ॥

ओं ध्येयः सदा सवितृमण्डल मध्यवर्ती,
नारायणः सरसिजासनसन्निविष्टः ।
केयूरवान् मकरकुण्डलवान्किरीटी,
हारी हिरण्मयवपुर्धृतशङ्खचक्रः ॥

ओं शङ्खचक्र गदा पाणे ! द्वारका निलयाच्युत ।
गोविन्द ! पुण्डरीकाक्ष ! रक्ष मां शरणागतम् ॥

ओम् आकाशात्पतितं तोयं यथा गच्छति सागरम् ।
सर्वदेव नमस्कारः केशवं प्रति गच्छति ॥

ओं श्रीरंगमंगलमणिं, करुणानिवासं, श्रीवेङ्कटाद्रि शिखरालय मकालमेघम् । श्री हस्ति शैल शिखरोज्ज्वल पारिजातं, श्रीशं नमामि शिरसा यदुशैलदीपम् ॥

॥ इति संध्योपासनविधिः सम्पूर्णम् ॥

॥ अथ गुरुपरम्परा ॥

१ अस्मद् गुरुभ्योः नमः । २ अस्मत्परमगुरुभ्यो नमः ।
३ अस्मत् सर्वगुरुभ्यो नमः । ४ श्रीमतेरामानुजाय नमः ।
५ श्रीपरांकुशदासाय नमः । ६ श्रीमद्यामुनमुनये नमः ।
७ श्रीराममिश्राय नमः । ८ श्रीपुण्डरीकाक्षाय नमः ।
९ श्रीमन्नाथमुनये नमः । १० श्रीमते शठकोपाय नमः ।

११ श्रीमते विष्वक्सेनाय नमः ।　　१२ श्रियै नमः ।
१३ श्रीधराय नमः ॥

॥ श्लोक गुरुपरम्परा ॥

अस्मद्देशिकमस्मदीय परमाचार्यानशेषान् गुरून् ।
श्रीमल्लक्ष्मणयोगिपुङ्गवमहापूर्णौ मुनिं यामुनम् ॥
रामं पद्मविलोचनं मुनिवरं नाथं शठद्वेषिणं ।
सेनेशं श्रियमिन्दिरा सहचरं नारायणं संश्रये ॥

[अत्र मूलमन्त्र-द्वय मन्त्र चरमश्लोका अनुसन्धेयाः]

मूलमंत्रम्—ओं नमो नारायणाय ॥१॥
द्वयमंत्रम्—श्री मन्नारायणचरणौ शरणं प्रपद्ये ।
श्रीमते नारायणाय नमः ॥२॥
चरमश्लोक—सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज ।
अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः ॥३॥

॥ श्री रङ्गनाथ जी की तनया ॥

श्री स्तनाभरणं तेजश्श्रीरङ्गेशयमाश्रये ।
चिन्तामणिमिवोद्वान्तमुत्सङ्गेऽनन्तभोगिनः ॥१॥

॥ श्री लक्ष्मी जी की ॥

नमः श्रीरंगनायक्यै यद्भ्रू विभ्रमभेदतः ।
ईशेशितव्यवैषम्य निम्नोन्नतमिदं जगत् ॥२॥

॥ श्री विष्वक्सेन जी की ॥

श्रीरंगचन्द्रमसमिन्दिरया विहर्तुं ।
विन्यस्य विश्वचिदचिन्नयनाधिकारम् ॥
यो निर्वहत्यनिशमंगुलिमुद्रयैव ।
सेनान्यमन्यविमुखास्तमशिश्रियाम: ॥३॥

॥ श्री शठकोपस्वामी जी की ॥

माता पिता युवतयस्तनया विभूतिः ।
सर्वं यदेव नियमेन मदन्वयानाम् ॥
आद्यस्य नः कुलपतेर्वकुलाभिरामं ।
श्रीमत्तदंघ्रियुगलं प्रणमामि मूर्ध्ना ॥४॥

॥ श्रीनाथमुनिस्वामी जी की ॥

नमोचिन्त्याद्भुताक्लिष्टज्ञानवैराग्यराशये ।
नाथाय मुनयेऽगाधभगवद्भक्तिसिन्धवे ॥५॥

॥ पुण्डरीकाक्षस्वामी जी की ॥

नमः पंकजनेत्राय नाथश्रीपादपङ्कजे ।
न्यस्तसर्वभरायास्मत्कुलनाथाय धीमते ॥६॥

॥ श्रीराममिश्रस्वामी जी की ॥

अयततो यामुनमात्मदासमलर्कपत्रार्पणनिष्क्रयेण ।
यः क्रीतवानास्थितयौवराज्यं नमामि तं राममभेयसत्वम् ॥७

॥ श्री यामुनाचार्यस्वामी जी की ॥

यत्पदाम्भोरुहध्यान विध्वस्ताशेषकल्मषः ।
वस्तुतामुपयातोऽहंयामुनेयं नमामि तम् ॥८॥

॥ श्री महापूर्णस्वामी जी की ॥

कमलापतिकल्याणगुणामृतनिषेवया ।
पूर्णकामाय सततं पूर्णाय महते नमः ॥६॥

॥ श्री रामानुजस्वामी जी की ॥

यो नित्यमच्युतपदाम्बुजयुग्मरुक्म- ।
व्यामोहतस्तदितराणि तृणाय मेने ॥
अस्मद् गुरोर्भगवतोऽस्य दयैकसिन्धो-
रामानुजस्य चरणौ शरणं प्रपद्ये ॥१०॥

॥ श्री गोविन्दाचार्यस्वामी जी की ॥

रामानुजपदच्छाया गोविन्दाह्वानपायिनी ।
तदायत्तस्वरूपा सा जीयान्मद्विश्रमस्थली ॥११॥

॥ श्री भट्टारकस्वामी जी की ॥

श्री पराशरभट्टार्यः श्रीरङ्गेशपुरोहितः ।
श्रीवत्साङ्कसुतः श्रीमान् श्रेयसे मेऽस्तु भूयसे ॥१२॥

॥ श्री वेदान्तिस्वामीजी की ॥

नमो वेदान्तवेद्याय जगन्मङ्गलहेतवे ।
यस्य वागमृतासारपूरितं भुवनत्रयम् ॥१३॥

॥ श्री कलिवैरिदासस्वामी जी की ॥

वेदान्तवेद्यामृतवारिराशेर्वेदार्थसारामृतपूरमग्र्यम् ।
आदाय वर्षन्तमहं प्रपद्ये कारुण्यपूर्णं कलिवैरिदासम् ॥१४

॥ श्री कृष्णपादस्वामी जी की ॥

श्री कृष्णपादपादाब्जे नमामि शिरसा सदा ।
यत्प्रसादप्रभावेन सर्वसिद्धिरभून्मम ॥१५॥

॥ श्री लोकाचार्यस्वामी जी की ॥

लोकाचार्याय गुरवे कृष्णपादस्य सूनवे ।
संसारभोगिसन्दष्टजीवजीवातवे नमः ॥१६॥

॥ श्री शैलनाथस्वामी जी की ॥

नमः श्रीशैलनाथाय कुन्तीनगरजन्मने ।
प्रसादलब्धपरमप्राप्यकैङ्कर्यशालिने ॥१७॥

॥ श्री वरवरमुनिस्वामी जी की ॥

श्रीशैलेशदयापात्रं धीभक्त्यादि गुणार्णवम् ।
यतीन्द्रप्रवणं वन्दे रम्यजामातरं मुनिम् ॥१८॥

॥ श्री प्रतिवादिभयङ्करस्वामी जी की ॥

वेदान्तदेशिककटाक्षविवृद्धबोधं ।
कान्तोपयन्तृयमिनः करुणैकपात्रम् ॥
वत्सान्ववायमनवद्य गुणैरुपेतं ।
भक्त्या भजामि परवादिभयंकरार्यम् ॥१९॥

॥ श्री अनन्ताचार्यस्वामी जी की ॥

श्री मद्वादिभयंकरार्यतनयं तत्पादपद्माश्रित-
स्वान्तं कान्तवराभिधानयमिनां कारुण्यसङ्गाजनम् ।
श्री वत्सान्वयभूषणं श्रियनिधिं वात्सल्यरत्नाकरं-
वन्दे श्रीमदनन्तदेशिकवरं वेदान्तविद्यानिधिम् ॥२०॥

॥ श्री रामानुजाचार्यस्वामी जी की ॥

श्रीवादिभयकृत्पौत्रं तत्पादाब्जैकधारकम् ।
अनन्तार्यगुरोः पुत्रं रामानुजगुरुं भजे ॥२१॥

॥ श्री सौम्यवराचार्यस्वामी जी की ॥

यत्तातस्समभूदुदारमहिमानन्तार्यवर्यस्सतां ।
सम्पूज्यः प्रतिवादिभीकरगुरुर्यत्ताततातो महान् ॥
यन्नाथः परमः पुमाननन्तनिधिः श्रीवेङ्कटाधीश्वरः ।
सेवे सौम्यवराभिधं गुरुवरं तं भास्करं विद्यया ॥२२॥

॥ श्री वरदनारायणाचार्यस्वामी जी की ॥

विमतवादीभसिंहार्यवंशोद्भवं ।
रुचिरजामातृसूनुं महान्तं वरम् ॥
सुगुरुरामानुजार्याङ्घ्रिपद्माश्रितं ।
वरदनारायणं सद्गुरुं संश्रये ॥२३॥

॥ श्री वेदान्तदेशिकस्वामी जी की ॥

वरदार्य गुरोः पुत्रं तत्पादाब्जैकधारकम् ।
ज्ञानभक्त्यादिजलधिं वन्दे वेदान्तदेशिकम् ॥२४॥

॥ श्री सौम्यवरदाचार्यस्वामी जी की ॥

वेदान्ताचार्यतनयं वेदान्तद्वयपारगम् ।
श्रीसौम्यवरदाचार्य श्रेयसां निधिमाश्रये ॥२५॥

॥ श्री प्रणतार्तिहराचार्यस्वामी जी की ॥

निगमान्तगुरोः पुत्रं वत्सान्वयविभूषणम् ।
वरदार्यकृपापात्रं प्रणतार्तिहरं भजे ॥२६॥

॥ श्री वेदान्तदेशिकस्वामी जी की ॥

प्रणतार्तिहराचार्यतनयं विनयोज्ज्वलम् ।
रम्योपयन्तृसच्छात्रं वन्दे वेदान्तदेशिकम् ॥२७॥

॥ श्री वरदाचार्यस्वामी जी की ॥

वेदान्तार्यतनूभवं वरदगुर्वात्तागमान्तद्वयं-
श्रीवत्सान्वयहाररत्नायकमणिं शिष्यौघसंजीवनम् ।
शांतिक्षांतिविरक्तिभक्तिविमलज्ञानक्रियाभास्वरं -
वन्देऽहं वरदार्यदेशिकवरं वात्सल्यवारां निधिम् ॥२८॥

॥ श्री वेङ्कटाचार्यस्वामी जी की ॥

वरदार्यगुरोः पुत्रं तत्पादाब्जैकधारकम् ।
वेदान्तद्वयनिष्णातं वेङ्कटार्यमहं भजे ॥२९॥

॥ श्री रङ्गदेशिकस्वामी जी की ॥

वेङ्कटार्यगुरोः पुत्रं तत्पादाब्जसमाश्रयम् ।
वेदान्तद्वयमार्गज्ञं वन्दे श्रीरंगदेशिकम् ॥२०॥

॥ श्री श्रीनिवासाचार्यस्वामी जी की ॥

श्रीवत्सवंशकलशोदधिपूर्णचन्द्रं ।
श्रीरङ्गराजतनयं रमणीयशीलम् ॥
तस्माद्वाप्तनिगमान्तयुगार्थसारं ।
श्री श्रीनिवासगुरुशेखरमाश्रयामः ॥२१॥

॥ श्री अनन्ताचार्यस्वामी जी की ॥

श्री वादिभीकृत्कुलवारिराशि ।
निशाधिनाथं कलयामि नित्यम् ॥
श्रीश्रीनिवासार्यपदाब्जभृङ्गम् ।
अनन्तवर्यं तनयं तदीयम् ॥२२॥

॥ श्री श्रीनिवासाचार्यस्वामी जी की ॥

नित्यं त्वनन्तगुरुवर्यतनूजरत्नं ।
श्रीश्रीनिवासपदपङ्कजचञ्चरीकम् ।
श्रीवेङ्कटार्यगुरुसाधिततत्त्ववोधं ।
श्रीश्रीनिवासगुरुवर्यमहं प्रपद्ये ॥२३॥

॥ श्री अनन्ताचार्यस्वामी जी की ॥

श्रीवत्सवंशाम्बुधिपूर्णचन्द्रं ।
श्रीश्रीनिवासार्यगुरोस्तनूजम् ॥
तत्प्राप्तवेदान्तयुगार्थसार-
मनन्तवर्यं प्रणमामि नित्यम् ॥३४॥

॥ श्री वेदान्ताचार्यस्वामी जी की ॥

वन्दे श्रीमदनन्तदेशिकदया प्राप्तागमान्तद्वयं ।
श्रीवाग्भूषणभावबोधतदनुष्ठानादिदत्तादरम् ॥
श्रीवत्सान्वयदुग्धवारिधिविधुं शान्त्यादिरत्नाकरं ।
स्वाङ्घ्रिद्वन्द्वसमाश्रितातिसुलभं वेदान्तवर्याभिधम् ॥१

॥ श्री श्रीनिवासाचार्यस्वामी जी की ॥

वेदान्तयुग्मनिपुणं पदवादिभीकृद् ।
वेदान्तनामगुरुपुङ्गवपादभक्तम् ॥
श्री श्रीनिवासगुरुमाश्रितपारिजातं ।
ध्यायाम्यनन्तगुरुवर्यपदेऽभिषिक्तम् ॥२॥

॥ श्री रामानुजाचार्यस्वामी जी की ॥

श्रीवत्सवंशकलशोदधिपूर्णचन्द्रं-
श्रीश्रीनिवासगुरुवर्यकृपैकपात्रम् ।
शान्त्यादिसद्गुणनिधिं परमार्थनिष्ठं-
रामानुजार्यमनिशं हृदि चिन्तयामि ॥३॥

॥ श्री कृष्णदेशिकस्वामी जी की ॥

श्रीवत्सवंशकलशोदधिपूर्णचन्द्रं-
श्रीश्रीनिवासगुरुवर्यकृपैकपात्रम् ।
रामानुजार्यतनयं विनयाभिरामं-
श्रीकृष्णदेशिकमहं प्रणतोस्मि नित्यम् ॥४॥

॥ श्री अनन्तसूरिस्वामी जी की ॥

श्रीवत्सवंशकलशोदधिपूर्णचन्द्रं-
श्रीकृष्णसूरिपदपङ्कजभृङ्गराजम् ॥
श्रीरङ्गवेङ्कटगुरूत्तमलब्धबोधं-
भक्त्या भजामि गुरुवर्यमनन्तसूरिम् ॥५॥

॥ श्री श्रीपतिस्वामी जी की तनया ॥

श्रीवादिभीकर गुरूत्तमवंशसिन्धु-
शीतांश्वनन्तगुरुवर्य्यपदाब्जभृङ्गम ।
श्रीगौतमान्वयपयोनिधिपूर्णचन्द्रं-
श्रीश्रीपतिं गुरुवरं शरणं प्रपद्ये ॥२५॥

॥ श्री अच्युतस्वामी जी की ॥

श्रीवत्सवंशकलशोदधिपूर्णचन्द्रं-
श्रीपत्यभिख्यगुरुवर्यपदाब्जभृङ्गम् ।
शान्त्यादिसद्गुणनिधिंपरमार्थनिष्ठं-
नौम्यच्युतं गुरुवरं शिरसा सदाऽहम् ॥२६॥

॥ श्री विष्णुचित्तस्वामी जी की ॥

अच्युतार्यपदाम्भोजचञ्चरीकायितान्तरम् ।
कान्यकुब्जकुलोत्पन्नं विष्णुचित्तं गुरुम्भजे ॥३७॥

॥ श्री साधुशरणस्वामी जी की ॥

श्रीकान्यकुब्जकुलवारिधिपूर्णचन्द्रं श्री विष्णुचित्त-गुरुवर्यपदाब्जभृङ्गम् । ज्ञानादिसद्गुणगणौघमहाम्बुराशिं ध्यायामि साधुशरणाख्यगुरुं सदाऽहम् ॥३८॥

॥ श्री रामकृष्णस्वामी जी की ॥

श्रीवत्सवंशकलशोदधिपूर्णचन्द्रमार्यस्य साधुशरणस्य कृपैकपात्रम् । ज्ञानादिसद्गुणनिधिं करुणानिधानं श्रीरामकृष्णगुरुवर्यमहं प्रपद्ये ॥३९॥

॥ श्री त्रिदण्डस्वामी जी की तनया ॥

काषायं यज्ञसूत्रं शुचिवपुषि तथा चोर्ध्वपुण्ड्रं च भाले ।
यस्यास्ते दक्षहस्ते कलिकुमतिगिरीन्द्रेन्द्रवज्रं त्रिदण्डम् ॥
संसाराग्निप्रशान्त्यै भृतजलममलं दारुपात्रं पवित्रम् ।
श्रीविष्वक्सेनसूरेः पदकमलयुगं श्रेयसे संश्रयामि ॥४०॥

॥ इति गुरुपरम्परा सम्पूर्णा

❀ अथ श्रीत्रिदण्डिस्वामिनां प्रपत्तिप्रारम्भः ❀

श्रीशाङ्घ्रिपङ्कजसुधामनु-सानुरागं,
काषायितं च सुमनोऽखिलसद्रसेभ्यः ।
सुव्यञ्जयद्विधृतवस्त्रकषायविष्वक्-
सेनेशयोगिचरणौ शरणं प्रपद्ये ॥१॥

भ्राजल्ललाटवरसद्रचितोर्ध्वपुण्ड्रः,
शुभ्रोपवीतसुशिखायुतसुत्रिदण्डः ।
यो वादिभीतिकृदन्तगुरोः सुशिष्यः,
सेनेशयोगिचरणौ शरणं प्रपद्ये ॥२॥

सिद्धाश्रमे चरितनामवनेऽभिषिक्तः,
यः श्रीपतीति विदिते महिते सुपीठे ।
श्रीरामकृष्ण गुरुवर्य्य-पदाब्जभृङ्ग,
सेनेशयोगिचरणौ शरणं प्रपद्ये ॥३॥

यौ योजनस्थितसुगाङ्गजल प्रदेशा-
वास्यार्णवश्रुतिविदग्रजवंशचंद्रौ ।
मंदाकिनीसरयुतीर्थ सुयज्ञकारि,
सेनेशयोगिचरणौ शरणं प्रपद्ये ॥४॥

गीर्वाणवाग्विभववर्द्धनदत्तविद्या,
पीठेषु संख्यवर जन्मविधायकौ यौ ।
श्रीवेदमार्गपरिपुष्टिविधातृविष्वक्-
सेनेशयोगिचरणौ शरणं प्रपद्ये ॥५॥

यो वा पयोव्रतमुदारतरं गृहीत्वा अष्टोत्तरप्रशत दिव्यसुदेशसृष्टेः । नारायणस्य वरमंगलकारिविष्वक्सेनेश-योगिचरणौ शरणं प्रपद्ये ॥६॥

नारायणेन रमया प्रथितं प्रपत्तिधर्मं विवर्धितमुरी-कृतविग्रहौ यौ । नारायणात्पितुरथेन्दिरया सुमात्रा सेनेशयोगिचरणौ शरणं प्रपद्ये ॥७॥

श्रीभाष्यकारवरवंशमहाप्रदीपौ लोकार्यसूक्ति वर-वर्षणवारिवाहौ । श्रीमच्छठारिचरणाम्बुजराजहंस सेनेश-योगिचरणौ शरणं प्रपद्ये ॥८॥

श्रीस्तोत्ररत्नवरभावप्रकाशकारश्चिन्तामणि वचन-भूषणकेऽर्पको यः । यो वार्थपञ्चकसुमर्मविबोधकारी सेनेशयोगिचरणौ शरणं प्रपद्ये ॥९॥

चूडामणि च विमलां सुविरच्य वार्तामालाविभूषण-करो सहितोमहद्भिः । अष्टाङ्गयोगसुसमाधि विधिज्ञ-विष्वक्सेनेशयोगिचरणौ शरणं प्रपद्ये ॥१०॥

अर्चासमर्चनपुरस्सरवेदमार्ग विप्लावनव्रतिगणस्य शिरः सुवज्रौ । पापण्डिदन्तिकटभेदनसिंहविष्वक्सेनेश-योगिचरणौ शरणं प्रपद्ये ॥११॥

॥ इति प्रपत्तिसमाप्तिः ॥

❀ अथ श्रीत्रिदण्डिस्वामिनां मंगलाशासनप्रारम्भः ❀

मंगलं यतिवर्य्याय सेनेशप्रतिमूर्तये ।
वादिभीकरवंशाय विष्वक्सेनार्ययोगिने ॥१॥

मंगलं रामकृष्णार्यकृपासगुणराशये ।
श्रीशाङ्घ्र्यब्जमधुज्ञाय विष्वक्सेनार्ययोगिने ॥२॥

मंगलं वादिभीकरानन्तार्यकरुणावशात् ।
लब्धसर्वार्थशास्त्राय विष्वक्सेनार्ययोगिने ॥३॥

मंगलं गुरुवर्य्याय श्रीसनातनवैदिकम् ।
धर्मं लोप्तुं प्रवृत्तानां शिरोवज्रवराङ्घ्रये ॥४॥

यज्ञैः सुविततैर्लोके देवानां मोदकारिणे ।
विष्वक्सेनयतीन्द्राय नित्यश्रीर्नित्यमंगलम् ॥५॥

योगसिध्याद्भुतैः कार्यैर्लोकमंगलकारिणे ।
विष्वक्सेनाय मुनये नित्यश्रीर्नित्यमंगलम् ॥६॥

रामानुजाचार्यकरुणापूर्णपात्राय योगिने ।
विष्वक्सेनाय मुनये नित्यश्रीर्नित्यमंगलम् ॥७॥

पयोव्रतपवित्राय श्रीशमंगलकारिणे ।
विष्वक्सेनाय मुनये नित्यश्रीर्नित्यमंगलम् ॥८॥

नित्यं सुविहिताचार प्रतिमाधवमूर्तये ।
विष्वक्सेनयतीन्द्राय नित्यश्रीर्नित्यमंगलम् ॥९॥

व्याख्यानैः शुभलेखैश्च श्रीभाष्यार्थप्रवर्षिणे ।
विष्वक्सेनार्यमुनये नित्यश्रीर्नित्यमंगलम् ॥१०॥

लक्ष्मीप्रपन्नरचितस्तुतिपुष्पार्चिताङ्घ्रये ।
विष्वक्सेनार्य मुनये नित्यश्रीर्नित्यमंगलम् ॥११॥

॥ इति मङ्गलाशासनं समाप्तम् ॥

❀ अथ श्रीत्रिदण्डिस्वामिनां सुप्रभातप्रारम्भः ❀

श्रीरामकृष्णगुरुपादसरोजभृङ्ग श्रीवादिभीतिकृद-नन्तगुरुप्रमोद । रामानुजार्यमुखपङ्कजसूर्य विष्वक्सेनेश-योगिभगवँस्तव सुप्रभातम् ॥१॥

श्रीमत्सनातनसुनीतिविवर्द्धनाय वादान् विधूय कुमतिव्रजसुप्रक्लृप्तान् । उत्तिष्ठ जागृहि यतीन्द्रधुरीण विष्वक्सेनेशयोगिभगवँस्तव सुप्रभातम् ॥२॥

ग्रंथान् द्विचन्द्रबहुलाँल्लिखितुं प्रभाते,
लोकान्समान्समुपदेष्टुमतिप्रशस्तान् ।
श्रीवेदमार्गमतिशस्ततरं विधातुम् ,
सेनेशयोगि भगवँस्तव सुप्रभातम् ॥३॥

लोकार्यसूक्तवरपङ्कजभास्करार्य,
श्रीयामुनार्यवरसूक्तिविकाशकार ।
आचार्यसन्ततिसुवाक्यसदर्थकार,
सेनेशयोगि भगवँस्तव सुप्रभातम् ॥४॥

आराधनं रचयितुं कमलासखस्य,
सम्यक्समाधिविधिना यतिपुङ्गवार्य ।
उत्तिष्ठ योगपथनैभवबोधकारिन् ,
सेनेशयोगि भगवँस्तव सुप्रभातम् ॥५॥

कौपीनयुग्मकटिवस्त्रकमण्डलूँश्च ,
श्रीदन्तकाष्ठमपि हे यतिराजवर्य्य
पाणौ निधाय निवसन्ति विशुद्धगात्राः,
सेनेशयोगि भगवँस्तव सुप्रभातम् ॥६॥

शिष्यो ह्ययं सुविनतः परिगृह्य सौम्यः,
श्रीपादुके तव पदाब्जयुगे प्रयोक्तुम् ।

द्वारि स्थितिं रचयते विनतार्तिहारिन् ,
सेनेशयोगि भगवँस्तव सुप्रभातम् ॥७॥

स्नातुं सुजह्नुतनयासलिलेषु शिष्यैः,
विज्ञैस्तथा यतिवरैर्वरवैष्णवेन्द्रैः ।
एकान्तिभिः परमभागवतैर्निषेव्य,
सेनेशयोगि भगवँस्तव सुप्रभातम् ॥८॥

ब्राह्मे विबुध्य सुबुधाः गुरुसन्ततिं स्वां,
सम्यक्प्रणम्य हरये नम इत्युदारम् ।
उच्चार्य ते सुविमलं जयमुद्गिरन्ति,
सेनेशयोगि भगवँस्तव सुप्रभातम् ॥९॥

श्रीकान्तधामनिलयो य इहास्ति देवः,
श्रीमङ्गलार्तिकमिषेण विबोधमाप्ता ।
तद्दृष्टिपातसुखमुत्तममाप्तुमञ्जः ,
उत्तिष्ठ हे यतिगुरो तव सुप्रभातम् ॥१०॥

प्रातः पठन्ति परितः परमप्रपन्ना,
अष्टाक्षरप्रमुखमन्त्रगणान्सुदिव्यान् ।
श्रीवैष्णवास्तव पदाब्जनिविष्टभाराः,
सेनेशयोगि भगवँस्तव सुप्रभातम् ॥११॥

॥ सुप्रभातं सम्पूर्णम ॥

❀ अथ श्रीलक्ष्मीनारायणप्रपत्तिः ❀

अनन्ताचार्यकृपया वेदान्तद्वयपारगम् ।
रामकृष्णाङ्घ्रिसद्भक्तं विष्वक्सेनमुनिं भजे ॥१॥

पद्मायताक्षि रुचिरं नवनीरदाभं
श्रीविग्रहं विदधतो नयनाभिरामम् ।
पीताम्बरैर्विलसतो ह्यखिलेश लक्ष्मी-
नारायणस्य चरणौ शरणं प्रपद्ये ॥१॥

सव्योर्ध्वपाणिपुटकेऽष्टदलारुणाब्जं
दक्षे च कोटिशशिनिन्दकपाञ्चजन्यम् ।
विभ्राजते भगवतोऽभयदस्य लक्ष्मी-
नारायणस्य चरणौ शरणं प्रपद्ये ॥२॥

कौमोदकीति गदयाऽखिलदैत्यहन्त्याऽ-
धोराजते यदरविन्दकरः सुदक्षः ।
वामार्ककोटिनिभभासितचक्र लक्ष्मी-
नारायणस्य चरणौ शरणं प्रपद्ये ॥३॥

श्रीचूर्णपूर्णधवलोर्ध्वविशालपुण्ड्रं
दीर्घे ललाटपटले सुषमां तनोति ।

वामाङ्गिनी च कमला सुदयेश लक्ष्मी-
नारायणस्य चरणौ शरणं प्रपद्ये ॥४॥

काले चिरन्तनगते विविधोपचारैः
सप्तर्षिभिः समुदितैः परिपूजितौ तौ ।
वज्रांकुशध्वजयुतौ शुभदौ च लक्ष्मी-
नारायणस्य चरणौ शरणं प्रपद्ये ॥५॥

विष्वक्सुसेन यतिराज समर्चिताङ्घ्रे-
र्नित्यं जनार्तिहरणार्थसमुत्थितस्य ।
पीठे शिवे मणिमये जगदीश लक्ष्मी-
नारायणस्य चरणौ शरणं प्रपद्ये ॥६॥

तन्निःसृता भगवती न जहाति योगं
पादोदकी तव पदे ह्यधुनापि सक्ता ।
हे कञ्जनेत्र प्रणतार्तिहरेश लक्ष्मी-
नारायणस्य चरणौ शरणं प्रपद्ये ॥७॥

व्यासादिभिर्मुनिजनैस्तव वेदगर्भा
सिद्धाश्रमादिविविधैः प्रथिता पुरी या ।
तस्यां प्रभोर्निवसतो महनीयलक्ष्मी-
नारायणस्य चरणौ शरणं प्रपद्ये ॥८॥

नाथ त्वमेव किलवामनकावतारे
राज्यं बलेस्त्रिपदभूमिमिषेण गृह्णन् ।
इन्द्राय दित्सुरददा वरदेश लक्ष्मी-
नारायणस्य चरणौ शरणं प्रपद्ये ॥९॥

श्रीकौशिकादिमुनियागक्रियाकलापेऽ-
नाशि त्वया निशिचरो खलुरामरूपे ।
आरक्ष्य दीक्षितमुनिं धनुषा च लक्ष्मी-
नारायणस्य चरणौ शरणं प्रपद्ये ॥१०॥

पत्रार्पणैर्द्रुपदजा कुसुमैर्गजेन्द्रो
यं वै फलेन शवरी नृपरन्तिरद्भिः ।
सम्यक् तुतोष चरणैकधनस्तु लक्ष्मी-
नारायणस्य चरणौ शरणं प्रपद्ये ॥११॥

हे श्रीपतीश भगवन् मकरस्थितार्के
त्वं मादृशाघपतितोद्धरणाय नूनम् ।
दर्शे गुरावजनि चैत्ररथे तु लक्ष्मी-
नारायणस्य चरणौ शरणं प्रपद्ये ॥१२॥

त्यक्तैषणा निगमकोविदविप्रपन्ना-
हेऽनन्तदेव तव मुग्धकरैः कटाक्षैः ।

मुग्धा भवन्ति चिरकालत एव लक्ष्मी-
नारायणस्य चरणौ शरणं प्रपद्ये ॥१३॥

सर्गस्थितिप्रलयकर्मसुसंविधात,
स्त्वामामनन्ति निगमा यशसानुरक्ताः ।
सिद्धाश्रमस्थ सुचरित्रवनेश लक्ष्मी-
नारायणस्य चरणौ शरणं प्रपद्ये ॥१४॥

श्रीवेङ्कटेशभरतादि समादृतेश,
त्वां वर्णयन्ति विबुधाः किल सामगीतैः ।
श्रीवत्सलाञ्छितविलक्षणशोभिलक्ष्मी-
नारायणस्य चरणौ शरणं प्रपद्ये ॥१५॥

आस्ते चरित्रवनमेत्य मनोऽनुकूलं,
सेवाधियार्चितपदो भुवि विष्णुपद्या ।
सेनेश्वरादिविबुधाधिपतेश्च लक्ष्मी-
नारायणस्य चरणौ शरणं प्रपद्ये ॥१६॥

दास्येप्सिताय पदपद्ममधुव्रताय,
त्वं देवराज शरणं प्रणिदेहि मह्यम् ।
तन्त्रादिभिः सुसमुदीरितकीर्तिलक्ष्मी-
नारायणस्य चरणौ शरणं प्रपद्ये ॥१७॥

हे मङ्गलेश करुणेश खगेश स्वामिन्
हे भक्तमानससरोपरकेलिकारिन् ।
भक्त्याश्रयान्यहमकिञ्चनकस्तु लक्ष्मी-
नारायणस्य चरणौ शरणं प्रपद्ये ॥१८॥

॥ इति सम्पूर्णम् ॥

❀ अथ श्रीलक्ष्मीनारायणमङ्गलाशासनम् ❀

अनन्ताचार्यकृपया वेदान्तद्वयपारगम् ।
रामकृष्णाङ्घ्रिसद्भक्तं विष्वक्सेनमुनिं भजे ॥१॥

मङ्गलं वेदवेद्याय श्यामसुन्दरमूर्तये ।
लक्ष्मीनारायणाख्याय देवाय परमात्मने ॥१॥
शङ्खपद्मगदाचक्रैः शोभिताय स्ववाससे ।
लक्ष्मीनारायणायस्तु भूयोभूयो हि मङ्गलम् ॥२॥
कौस्तुभाभरणग्रीव वामनाश्रमवासिने ।
लक्ष्मीनारायणेशाय मङ्गलं स्यात्किरीटिने ॥३॥
मङ्गलं कारुपेन्द्राय महनीयगुणाब्धये ।
लक्ष्मीनारायणायेदं नित्यं स्याद्बहुमङ्गलं ॥४॥
षड्भिरैश्वर्यवैराग्य यशोज्ञानबलादिभिः ।
मङ्गलं परिपूर्णाय लक्ष्मीनारायणाय मे ॥५॥

सदाभिवादनार्हाय दिव्यभ्रान्तादिसूरिभिः ।
लक्ष्मीनारायणायास्तु मंगलं यशसान्वितम् ॥६॥
सत्यव्रताय सत्याय त्रिसत्याय गुणात्मने ।
लक्ष्मीनारायणायेदं मङ्गलं सत्ययोनये ॥७॥
मङ्गलं धर्मकामाय बहुधा धृतरूपिणे ।
लक्ष्मीनारायणेशाय जगतामादिहेतवे ॥८॥
अच्युतानन्त गोविन्द रामकृष्णादियोगिभिः ।
मङ्गलं पूजितायास्तु लक्ष्मीनारायणाय हि ॥९॥
ब्रह्मादिस्तम्बपर्यन्तं येन विश्वं विनिर्मितम् ।
लक्ष्मीनारायणेशाय तस्मै स्यान्नित्यमंगलम् ॥१०॥
यस्मिन् वेदास्तु चत्वारो नेति नेति वदन्ति च ।
स्यान्नित्य मङ्गलं तस्मै लक्ष्मीनारायणाय हि ॥११॥
चन्द्रमा यस्य मनसः सूर्योऽजायत चक्षुषः ।
लक्ष्मीनारायणायास्तु तस्मै नित्यं सुमंगलम् ॥१२॥
अणोरणीयसे तुभ्यं महतश्च महीयसे ।
लक्ष्मीनारायणेशाय नित्यश्रीर्नित्यमंगलम् ॥१३॥
यस्तु वेदान् समुद्धर्तुं मात्स्यं रूपं विनिर्ममे ।
निमित्रे मंगलं तस्मै लक्ष्मीनारायणाय हि ॥१४॥

यत्प्रसादाद् दहत्यग्निः सूर्यादिश्चावभासते ।
मंगलं सततं तस्मै लक्ष्मीनारायणाय मे ॥१५॥
विहन्तुं यातुधानेशान् सुरकार्यचिकीर्षया ।
मङ्गलं ह्यवतीर्णाय लक्ष्मीनारायणाय हि ॥१६॥
माययोपात्तदेहाय भक्तदुःखविनाशिने ।
मंगलं पुण्डरीकाक्ष लक्ष्मीनारायणाय तु ॥१७॥
सुजनस्तवमाल्यैः स्वैः स्वर्चिताय मनोहरैः ।
मङ्गलं नूतनं नित्यं लक्ष्मीनारायणाय हि ॥१८॥

॥ इति सम्पूर्णम् ॥

❀ अथ श्रीलक्ष्मीनारायणसुप्रभातम् ❀

अनन्ताचार्यकृपया वेदान्तद्वयपारगम् ।
रामकृष्णाङ्घ्रि सद्भक्तं विष्वक्सेनमुनिं भजे ॥१॥

ब्रह्मा शिवः शतमखप्रमुखाः स्वदासै-
र्दास्यं समाचरितुमत्र सुवस्तुहस्ताः ।
निद्रां जहीहि भगवन् समुपस्थितास्त्वां-
श्रीवामनाश्रमपते तव सुप्रभातम् ॥१॥

सेनेश शेष विहगेश मुखास्त्वदीयाः
सत्पार्षदास्तव मुखाब्जसुधां प्रपातुम् ।
उद्बोधनाय तव मङ्गलगीतिसक्ताः
सिद्धाश्रमस्थभगवँस्तव सुप्रभातम् ॥२॥

वेदा इवात्मपितरं निजरक्षितारम्,
देवा उपेन्द्रमपि चैत्रवनोद्भवं त्वाम्
संबोधयन्त्यशरणाः जहि तां सुनिद्रां
लक्ष्मीधराव्यय विभो तव सुप्रभातम् ॥३॥

शय्यां गते त्वयि मुखाब्जमपश्यती ते
श्रीजाह्नवी भगवती ननु दुःखिता सा
प्रातस्तवोत्थितिविभावनहर्षघोषा
सिद्धाश्रमस्थभगवँस्तव सुप्रभातम् ॥४॥

गायन्ति देवमुनयोऽदितिपुण्यपुञ्ज
दैत्याधिपस्य तु बलेर्वरदृश्यभाग्य ।
सत्यव्रतस्य तव सुन्दरकैतवत्वं
श्रीवामनाश्रमपते तव सुप्रभातम् ॥५॥

सौन्दर्य तर्क सुतपोव्रतधर्मजन्य—
भूर्वर्णिताद्यवनितो मुनिगौतमोऽन्यैः

त्वपादपद्मरजसः सुमहत्वमेव
गायत्युत्तिष्ठ भगवँस्तव सुप्रभातम् ॥६॥

वीणास्वरैः सुमधुरैरमरर्षिरेषो
गायन् सुरैस्तव यशोऽखिलतीर्थतीर्थम् ।
सम्बोधयत्यपि च सत्कुरु तान् सनाथान्
सिद्धाश्रमस्थ भगवँस्तव सुप्रभातम् ॥७॥

शापप्रहार इव यस्य पदप्रहारो-
विप्रामरस्य भवतोऽति विशेषलक्ष्म ।
तां तेऽग्रयशान्तिमुपगायति भार्गवोऽन्यैः
श्रीवेदगर्भ भगवँस्तव सुप्रभातम् ॥८॥

ब्रह्मा समास्य तव यज्ञविधौ यथैव,
संरक्षणं प्रकुरुते क्रतुराजकस्य ।
उद्दालको मुनिरसावपि ते सुगुप्त्यै,
सन्तिष्ठते जलधिजाप्रिय सुप्रभातम् ॥९॥

तत्ताटकादि यजनारिवधादि तुष्टै-
र्गोब्राह्मणैस्तव सुचारु चरित्रचित्रम् ।
रामायणं हि स ह गायति कौशिकोऽपि
लक्ष्मीधराव्यय विभो तव सुप्रभातम् ॥१०॥

धेनुव्रजोऽयमिह ते मुखपद्मशोभां,
पातुं प्रबोधनविधानकृतादरस्ते ।
हुङ्कारघोषमुरुधा प्रकरोति लक्ष्मी-
नारायणाख्य भगवँस्तव सुप्रभातम् ॥११॥

भृङ्गावली कमलकोशविबन्धमुक्ता
पातुं त्वदक्षिमुखपादकराब्जशोभाम् ।
श्रीसामघोषमिव हिं प्रकरोति लक्ष्मी-
नारायणाख्य भगवँस्तव सुप्रभातम् ॥१२॥

गङ्गावनेचरशुकाः पिकचक्रवाकाः
वैयाघ्रसुन्दरसरोवरराजहंसैः ।
गायन्ति ते विशदकर्म महाघनाशं,
श्रीवामनाश्रमपते तव सुप्रभातम् ॥१३॥

गोदेव देव निखिलादनिपीडिता ते,
प्रेष्ठातिप्रेष्ठजनिभूर्लघुमुञ्च शय्याम् ।
गायन्ति चेति मुनयोऽद्यतना इहस्थाः
सिद्धाश्रमस्थ भगवँस्तव सुप्रभातम् ॥१४॥

अस्तं प्रयात्युदयमेष विधुश्च भास्वान् ,
सम्बोधयत्यपि समं निजकृत्यकालम् ।

धर्मोऽप्युदेतुमुपगायति मंगलं ते,

सिद्धाश्रमस्थ भगवँस्तव सुप्रभातम् ॥१५॥

सुप्तास्तवैव जठरे प्रलयेऽपि जीवाः

लब्ध्वा विलक्षणभवत्सकृदीक्षणं ते ।

स्वे स्वे सुधर्मनिरताः सुपदं लभेरन्,

श्रीवेदगर्भ भगवँस्तव सुप्रभातम् ॥१६॥

त्वय्युत्तिथे निरुपधौ निखिलाण्डबन्धौ,

नारायणानिजनिजाण्डसुकृत्यवाहाः ।

एकत्र हृष्टरविरेष समत्र हृष्टः

सिद्धाश्रमस्थ भगवँस्तव सुप्रभातम् ॥१७॥

गायञ्जनान् सगुणगीत परम्परां ते,

सद्यः कुरुष्व चरणाम्बुजसक्तचित्तान् ।

वै ते भ्रमन्ति सततं विरता कथायां

श्रीवामनाश्रमपते तव सुप्रभातम् ॥१८॥

॥ इति श्रीलक्ष्मीनारायणसुप्रभातम् ॥

॥ अथ ध्यानम् ॥

अरुणकमलसंस्था तद्रजःपुञ्जवर्णा
करकमलधृतेष्टाऽभीतियुग्माम्बुजा च ।
मणिकटकविचित्रालंकृता कल्पजालैः
सकलभुवनमाता सन्ततं श्रीः श्रियै नः ॥

॥ श्रीसूक्तम् ॥

ओं हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम् ।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो ममावह ॥१॥
ओं तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम् ॥२॥
ओं अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रबोधिनीम् ।
श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम् ॥३॥
ओं कांसोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम् ।
पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥४॥
ओं चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम् ।
तां पद्मनेमिं शरणमहं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे ॥५

ओं आदित्यवर्णे तपसोधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथविल्वः।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मायांतरायांश्च वाह्या अलक्ष्मीः॥६
ओं उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह ।
प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे ॥७॥
ओं क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम् ।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वान्निर्णुद मे गृहात् ॥८॥
ओं गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् ।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥९॥
ओं मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि ।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः ॥१०॥
ओं कर्दमेन प्रजा भूता मयि संभव कर्दम ।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम् ॥११॥
ओं आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे ।
निच देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले ॥१२॥
ओं आर्द्रां पुष्करिणीं यष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम् ।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो ममावह ॥१३॥
ओं आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम् ।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो ममावह ॥१४॥

ओं तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान्विन्देयं पुरुषानहम् ।१५
ओं यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहूयादाज्यमन्वहम् ।
श्रियः पञ्चदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत् ॥१६॥

॥ अथ ध्यानम् ॥

ध्येयः सदा सवितृमण्डलमध्यवर्ती,
नारायणः सरसिजासनसन्निविष्टः ॥
केयूरवान् मकरकुण्डलवान्किरीटी ।
हारी हिरण्मयवपुर्धृतशङ्खचक्रः ॥

॥ अथ पुरुषसूक्तम् ॥

ओं सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् ।
स भूमि ठँ सर्वतस्पृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥१॥
ओं पुरुष एवेद ठँ सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम् ।
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति ॥२॥
ओं एतावानस्य महिमाऽतो ज्यायाँश्च पूरुषः ।
पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि ॥३॥
ओं त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहा भवत्पुनः ।
ततो विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशने अभि ॥४॥

ओं ततो विराडजायत विराजोऽ अधिपूरुषः ।
सजातो अत्यरिच्यत पश्चाद् भूमिमथो पुरः ॥५॥
ओं तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः संभृतं पृषदाज्यम् ।
पशूँस्ताँश्चक्रे वायव्यानारण्या ग्राम्याश्च ये ॥६॥
ओं तस्माद्यज्ञात्सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे ।
छन्दा ठँ सि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत ॥७॥
ओं तस्मादश्वा अजायन्त ये के चोभयादतः ।
गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता अजावयः ॥८॥
ओं तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन् पुरुषं जातमग्रतः ।
तेन देवा अयजन्त साध्या ऋषयश्च ये ॥६॥
ओं यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन् ।
मुखं किमस्यासीत्किंबाहू किमूरू पादा उच्येते ॥१०॥
ओं ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्बाहू राजन्यः कृतः ।
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्या ठँ शूद्रो अजायत ॥११॥
ओं चन्द्रमा मनसोजातश्चक्षोः सूर्योऽअजायत ।
श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत ॥१२॥
ओं नाभ्या आसीदन्तरिक्ष ठँ शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत ।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ २ अकल्पयन् ॥१४॥

ओं यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत ।
वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः ॥१४॥
ओं सप्तास्यासन् परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः ।
देवा यद्यज्ञं तन्वाना अवध्नन्पुरुषं पशुम ॥१५॥
ओं यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् ।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥१६

॥ अथोत्तरनारायणानुवाकः ॥

अद्भ्यः सम्भृतः पृथिव्यै रसाच विश्वकर्मणः समवर्त्तताग्रे ।
तस्य त्वष्टा विदधद्रूपमेति तन्मर्त्यस्य देवत्वमाजानमग्रे ॥१
वेदाहमेतं पुरुषं महान्तमादित्यवर्णन्तमसः परस्तात् ।
तमेव विदित्वाति मृत्युमेतिनान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय ॥२॥
प्रजापतिश्चरति गर्भे अन्तरजायमानो बहुधा विजायते ।
तस्य योनिं परिपश्यन्ति धीरास्तस्मिन्ह तस्थुर्भुवनानि
विश्वा ॥३॥
यो देवेभ्य आतपति यो देवानां पुरोहितः ।
पूर्वो यो देवेभ्यो जातो नमो रुचाय ब्राह्मये ॥४॥
रुचं ब्राह्मं जनयन्तो देवा अग्रे तदब्रुवन् ।
यस्त्वैवं ब्राह्मणो विद्यात्तस्य देवा असन्वशे ॥५॥

श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम् । इष्णन्निषाणामुम्म इषाण सर्वलोकम्म इषाण ॥६

पुष्पाञ्जलिः

हरिः ॐ तद्विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः। दिवीव चक्षुराततम् ॥१॥ तद्विप्रासो विपन्यवो जागृवांसः समिन्धते विष्णोर्यत्परमं पदम् ॥२॥ पर्याप्तानन्तराय सर्वस्तोमोतिरात्रमुत्तममहर्भवति सर्वस्याप्त्यै सर्वस्य जित्यै सर्वमेव तेनाप्नोति सर्वं जयति, हरिः ॐ शान्तिः ॥३॥

ॐ सुगन्धवल्ली शतपत्रजाती सुवर्णचम्पावकुलोद्भवानि । गृहाण देवेश मयार्पितानि प्रभो हरे श्रीतुलसीदलानि ॥४॥

हरिः ओम् अग्निमीडे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजं । होतारं रत्नधातमम् ॥५॥

हरिः ओम् इषेत्वोर्जेत्वा वायवस्थो वायवस्थः देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्म्मणे ॥६॥

हरिः ओम् अग्न आयाहि वीतये गृणानो हव्य दातये निहोता सत्सि वर्हिषि ॥७॥

हरिः ओम् शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये शंयोरभिश्रवन्तु नः ॥८॥

ओम् इति अग्रे व्याहरेत्—नम इति पश्चात् नारायणायेत्युपरिष्टात्, ॐ इत्येकाक्षरं, नम इति द्वे अक्षरे, नारायणायेति पंचाक्षराणि एतद्वै नारायणस्याष्टाक्षरं पदं यो ह वै नारायणस्याष्टाक्षरं पदमध्येति। अनपब्रु वः सर्वमायुरेति विन्दते प्राजापत्यं रायस्पोषं गौपत्यं ततोऽमृतत्वमश्नुते तमोऽमृतत्वमश्नुते इति एवं वेद इत्युपनिषत् ॥९॥ (सा० वे० शिरसि नारायणोपनिषत्)

अथातः समयाचारिकान् धर्मान् व्याख्यास्यामः। धर्मज्ञः समयः प्रमाणं वेदाश्चत्वारो वर्णाः ब्राह्मण-क्षत्रिय-वैश्य-शूद्रास्तेषां पूर्वः पूर्वो जन्मतः श्रेयान् ॥१०॥

अथकर्माण्याराधानि गृह्यन्ते उदगयनपूर्वपक्षाहः पुण्याहेषु कार्याणि यज्ञोपवीतिना प्रदक्षिणम्। अथातो धर्म जिज्ञासा। अथातो ब्रह्म जिज्ञासा ॥११॥

नमस्तस्मै वराहाय लीलयोद्धरते महीम्।
खुरमध्यगतो यस्य मेरुः खणखणायते ॥१२॥

पितरं मातरं दारान्पुत्रान्बधून्सखीन्गुरून्।
रत्नानि धनधान्यानि क्षेत्राणि च गृहाणि च ॥१३॥

सर्वधर्मांश्च सन्त्यज्य सर्वकामांश्च साक्षरान्।
लोकविक्रान्तचरणौ शरणं ते व्रजं विभो ॥१४॥

त्वमेव माता च पिता त्वमेव,
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव
त्वमेव सर्वं मम देव-देव ॥१५॥

पिताऽसि लोकस्य चराचरस्य,
त्वमस्य पूज्यश्च गुरुर्गरीयान् ।
नत्वत्समोऽस्त्यभ्यधिकः कुतोऽन्यो,
लोकत्रयेऽप्यप्रतिमप्रभाव ॥१६॥

तस्मात्प्रणम्य प्रणिधाय कायं—
प्रसादये त्वामहमीशमीड्यम् ।
पितेव पुत्रस्य सखेव सख्युः—
प्रियः प्रियायार्हसि देव सोढुम् ॥१७॥

मनोवाक्कायैरनादिकालप्रवृत्तानन्ताकृत्यकरणकृत्याकरणभगवदपचारभागवतापचारसह्यापचाररूपनाना—विधानन्तापचारान् आरब्धकार्यान् अनारब्धकार्यान् कृतान्क्रियमाणान्करिष्यमाणाँश्च सर्वानशेषतः क्षमस्व । अनादिकालप्रवृत्तं विपरीतज्ञानम् आत्मविषयं कृत्स्न-जगद्विषयं च विपरीतवृत्तं चाशेषविषयमथापिवर्तिष्यमाणं च सर्वं क्षमस्व ॥

मदीयानादिकर्मप्रवाहप्रवृत्तां भगवत्स्वरूपतिरोधानकरीं विपरीतज्ञानजननीं स्वविषयाश्च भोग्यबुद्धेर्जननीं देहेन्द्रियत्वेन भोग्यत्वेन सूक्ष्मरूपेण चावस्थितां-देवीं गुणमयीं मायां दासभूतश्शरणागतोऽस्मि तवास्मि दास वक्तारं मां तारय ॥१८॥

इच्छामो हि महाबाहुं रघुवीरं महाबलम् ।
गजेन महता यान्तं रामं छत्रावृताननम् ॥१९॥

तं दृष्ट्वा शत्रुहन्तारं महर्षीणां सुखावहम् ।
बभूव हृष्टा-वैदेही भर्तारं परिषस्वजे ॥२०॥

तमद्भुतं बालकमम्बुजेक्षणं,
चतुर्भुजं शंखगदार्युदायुधम् ।
श्रीवत्सलक्ष्मं गलशोभि-कौस्तुभं
पीताम्बरं सान्द्रपयोदसौभगम् ॥२१॥

महार्हवैदूर्यकिरीटकुण्डल—
त्विषा परिष्वक्तसहस्रकुन्तलम् ।
उद्दाम कांच्याङ्गदकङ्कणादिभि—
र्विरोचमानं वसुदेव ऐक्षत ॥२२॥

तासामाविरभूच्छौरिः स्मयमानमुखाम्बुजः ।
पीताम्बरधरः स्रग्वी साक्षान्मन्मथमन्मथ ॥२३॥

एष नारायणः श्रीमान् क्षीरार्णवनिकेतनः ।
नागपर्यंकमुत्सृज्य ह्यागतो मथुरां पुरीम् ॥२४॥
अहो वीर्यमहोशौर्यमहोबाहुपराक्रमम् ।
नरसिंहं परं दैवं अहो बलमहोबलम् ॥२५॥
वैकुण्ठे तु परे लोके श्रिया सार्धं जगत्पतिः ।
आस्ते विष्णुरचिंत्यात्मा भक्तैर्भागवतैः सह ॥२६॥
मायावी परमानन्दस्त्यक्त्वा वैकुण्ठमुत्तमम् ।
स्वामी पुष्करणीतरे रमया सह मोदते ॥२७॥
मुक्तिदश्च मुमूक्षूणां सर्वेषां सर्वकामदः ।
क्रीडार्थं लोकरक्षार्थं वसाम्यत्र श्रिया सह ॥२८॥
वेङ्कटाद्रिसमं स्थानं ब्रह्माण्डे नास्ति किंचन ।
वेङ्कटेशसमो देवो न भूतो न भविष्यति ॥२९॥
जपापरिमलोल्लासवासिता परपल्लवम् ।
मुखं वरदराजस्य मुग्धस्मितमुपास्महे ॥३०॥
फाल्गुने मासिपूर्णायामुत्तरर्क्षेन्दुवासरे ।
गोविन्दराजो भगवान् प्रादुरासीन्महामुनिः ॥३१॥
कस्तूरीकलितोर्ध्वपुण्ड्रतिलकं कर्णान्तलोलेक्षणम् ।
मुग्धस्मेरमनोहराधरदलं मुक्ताकिरीटोज्ज्वलम् ॥

पश्यन्मानसपश्यतोहरवरं पर्यायपङ्केरुहम् ।
श्रीरङ्गाधिपतेः कदानुदवनं सेवेय भूयोऽप्यहम् ॥३२॥
कदा पुनः शंखरथांगकल्पकध्वजारविन्दांकुशवज्रलाञ्छनम् ।
त्रिविक्रम त्वच्चरणाम्बुजद्वयं मदीयमूर्धानमलं करिष्यति ॥३३
अखिलभुवनजन्मस्थेमभङ्गादिलीले,
विनतविविधभूतव्रातरक्षैकदीक्षे ।
श्रुतिशिरसिविदिप्ते ब्रह्मणि श्रीनिवासे,
भवतु मम परस्मिन् शेमुषी भक्तिरूपा ॥३४॥
पाराशर्य्यवचस्सुधामुपनिषद्‍‍ ̈ ̈दुग्धाब्धिमध्योद्‍धृताम् ।
संसाराग्निविदीपनव्ययगत ̈ ̈प्राणात्मसञ्जीवनीम् ॥

पूर्वाचार्यसुरक्षितांबहुमति,
व्याघातदूरस्थिताम् ।
आनीतान्तु निजाक्षरैस्सुमनसो—
भौमं पिबन्त्वन्वहम् ॥३५॥
जयति सकलविद्यावाहिनी जन्मशैलो,
जनिपथपरिवृत्तिश्रान्तविश्रान्तशाखी ।
निखिलकुमतिमाया शर्वरीबालसूर्यो,
निगमजलधिवेला पूर्णचन्द्रो यतीन्द्रः ॥३६॥

नमः प्रणवशोभितं नवकाषाय खण्डाऽम्बरम् ।
त्रिदण्डपरिमण्डितं त्रिविधतत्त्वनिर्वाचकम् ॥
दयाश्रितहृदं चलं दलितवादिवाग्वैभवम् ।
शमादिगुणसागरं शरणमेधि रामानुजम् ॥३७॥

उपवीतिनमूर्ध्वपुण्ड्रवन्तं त्रिजगत्पुण्यफलं त्रिदण्डहस्तम् ।
शरणागतसार्थवाहमीडे शिखया शेखरिणं पतिं यतीनाम् ॥३८

सुशंखचक्रलाञ्छनः सदूर्ध्वपुण्ड्रमण्डितः
सुकण्ठलग्नसत्तुलस्यनर्घ्यपद्ममालिकः
सितान्तरीय सोत्तरीय यज्ञसूत्रशोभितो-
ममाविरस्तु मानसे गुरुस्तु वेङ्कटेश्वरः ॥३९॥

नमञ्जस्यचितमिति भक्तिचित्रतूलिका,
भवाहिवीर्यमञ्जने नरेन्द्रमन्त्रयन्त्रणा ।
प्रपन्नलोककैरवप्रसन्नचारुचन्द्रिका,
शठारिहस्तमुद्रिका हठाद् धुनोति मे तमः ॥४०॥

भरताय परं नमोऽस्तु तस्मै प्रथमादाहरणाय भक्तिभाजाम्,
यदुपज्ञमशेषतः पृथिव्यां प्रथितो राघवपादुकाप्रभावः ॥४१॥

श्रीनगर्यां महापुर्य्यां ताम्रपर्ण्युत्तरे तटे,
श्रीतिंतिणीमूलधाम्निशठकोपाय मंगलम् ॥४२॥

(१) हरिः ॐ केशवाय नमः (२) ॐ नारायणाय नमः

(३) ॐ माधवाय नमः (४) ॐ गोविन्दाय नमः
(५) ॐ विष्णवे नमः (६) ॐ मधुसूदनाय नमः
(७) ॐ त्रिविक्रमाय नमः (८) ॐ वामनाय नमः
(९) ॐ श्रीधराय नमः (१०) ॐ हृषीकेशाय नमः
(११) ॐ पद्मनाभाय नमः (१२) ॐ दामोदराय नमः
(१३) ॐ लक्ष्मीनारायणाय नमः (१४) ॐ श्रीशठकोपाय नमः
(१५) ,, श्रीदित्यसूरिभ्यो नमः
(१६) ,, श्रीमते रामानुजाय नमः

नृत्यवाद्यादिगीतादिपुराणपठनादिभिः ।
राजोपचारैः सकलैः सन्तुष्टो भव राघव ॥

॥ अथ कृष्णाष्टोत्तरशतनामावलिः ॥

ओं केशवाय नमः ओं नारायणाय नमः
ओं माधवाय नमः ओं गोविन्दाय नमः
ओं विष्णवे नमः ओं मधुसूदनाय नमः
ओं त्रिविक्रमाय नमः ओं वामनाय नमः
ओं श्रीधराय नमः ओं हृषीकेशाय नमः
ओं पद्मनाभाय नमः ओं दामोदराय नमः
ओं श्री कृष्णाय नमः ओं कमलानाथाय नमः
ओं वासुदेवाय नमः ओं सनातनाय नमः

ओं वसुदेवात्मजाय नमः ओं पुण्याय नमः
ओं लीलामानुषविग्रहाय नमः ओं श्रीवत्सकौस्तुभधराय नमः
ओं यशोदावत्सलाय नमः ओं हरये नमः
ओं चतुर्भुजात्तचक्राब्जगदाखड्गाद्युदाधाय नमः
ओं देवकीनन्दनाय नमः ओं श्रीशाय नमः
ओं नन्दगोपप्रियात्मजाय नमः ओं यमुनावेगसंहारिणे नमः
ओं बलभद्रप्रियानुजाय नमः ओं पूतनाजीवितहराय नमः
ओं शकटासुरभञ्जनाय नमः ओं नन्दव्रजजनानन्दिने नमः
ओं सच्चिदानन्दविग्रहाय नमः ओं नवनीत विलिप्ताङ्गाय नमः
ओ नवनीतनटाय नमः ओं अनघाय नमः
ओं नवनीतनवाहराय नमः ओं मुचुकुन्दप्रसादकाय नमः
ओं षोडशस्त्रीसहस्रेशाय नमः ओं त्रिभंगीललिताकृतये नमः
ओं शुकवागमृताब्धीन्दवे नमः ओं गोविन्दाय नमः
ओं योगिनां पतये नमः ओं वत्सवाटचराय नमः
ओं अनन्ताय नमः ओं धेनुकासुरखण्डनाय नमः
ओं तृणीकृततृणावर्ताय नमः ओं यमलार्जुनभंजनाय नमः
ओं उत्तालतालभेत्रे नमः ओं तमालश्यामलाकृतये नमः
ओं गोपगोपीश्वराय नमः ओं योगिने नमः
ओं कोटिसूर्यसमप्रभाय नमः ओं इलापतये नमः

ओं परं ज्योतिषे नमः ओं यादवेन्द्राय नमः
ओं यदूद्वहाय नमः ओं वनमालिने नमः
ओं पीतवाससे नमः ओं पारिजातापहारकाय नमः
ओं गोवर्द्धनाचलोद्धर्त्रे नमः ओं गोपालाय नमः
ओं सर्वपालकाय नमः ओं अजाय नमः
ओं निरंजनाय नमः ओं कामजनकाय नमः
ओं कञ्जलोचनाय नमः ओं मधुघ्नाय नमः
ओं मथुरानाथाय नमः ओं द्वारिकानायकाय नमः
ओं बलिने नमः ओं वृन्दावनान्तसंचारिणे नमः
ओं तुलसीदामविभूषणाय नमः ओं स्यमन्तकमणिहर्त्रे नमः
ओं नरनारायणात्मकाय नमः ओं कुब्जाकृष्टाम्बराय नमः
ओं मायिने नमः ओं परमपुरुषाय नमः
ओं मुष्टिकासुरचाणूरमल्लयुद्धविशारदाय नमः
ओं संसारवैरिणे नमः ओं कंसारये नमः
ओं मुरारये नमः ओं नरकान्तकाय नमः
ओं अनादिब्रह्मचारिणे नमः ओं कृष्णाव्यसनकर्षकाय नमः
ओं शिशुपालशिरःछेत्रे नमः ओं दुर्योधनकुलान्तकाय नमः
ओं विदुराक्रूरवरदाय नमः ओं विश्वरूपप्रदर्शकाय नमः

ओं सत्यवाचे नमः
ओं सत्यसंकल्पाय नमः
ओं सत्यभामारताय नमः
ओं जयिने नमः
ओं सुभद्रापूर्वजाय नमः
ओं जिष्णवे नमः
ओं भीष्ममुक्तिप्रदाय नमः
ओं जगद्गुरवे नमः
ओं जगन्नाथाय नमः
ओं वेणुनादविशारदाय नमः
ओं वृषभासुरविध्वंसिने नमः
ओं बाणासुरान्तकाय नमः
ओं युधिष्ठिरप्रतिष्ठात्रे नमः
ओं बर्हिबर्हावतंसकाय नमः
ओं पार्थसारथये नमः
ओं अव्यक्ताय नमः
ओं गीतामृतमहोदधये नमः
ओं कालीयफणमाणिक्य-रंजितश्रीपदाम्बुजाय नमः
ओं दामोदराय नमः
ओं यज्ञभोक्त्रे नमः
ओं दानवेन्द्रविनाशकाय नमः
ओं नारायणाय नमः
ओं परब्रह्मणे नमः
ओं पन्नगाशनवाहनाय नमः
ओं जलक्रीडासमासक्त गोपी-वस्त्रापहारकाय नमः
ओं पुण्यश्लोकाय नमः
ओं तीर्थपादाय नमः
ओं वेदवेद्याय नमः
ओं दयानिधये नमः
ओं सर्वभूतात्मकाय नमः
ओं सर्वग्रहरूपिणे नमः
ओं परात्पराय नमः
ओं श्री रुक्मिणीसत्यभामासमेत श्री गोपालस्वामिने नमः

इति कृष्णाष्टोत्तरशतनामावलिः

॥ अथ श्रीरामाष्टोत्तरशतनामावलिः ॥

ओं श्री रामाय नमः ओं श्री रामभद्राय नमः
ओं श्री रामचन्द्राय नमः ओं शास्वताय नमः
ओं राजीवलोचनाय नमः ओं श्रीमते नमः
ओं राजेन्द्राय नमः ओं रघुपुङ्गवाय नमः
ओं जानकीवल्लभाय नमः ओं जैत्राय नमः
ओं जितामित्राय नमः ओं जनार्दनाय नमः
ओं विश्वामित्रप्रियाय नमः ओं दान्ताय नमः
ओं शरणत्राणतत्पराय नमः ओं वालिप्रमथनाय नमः
ओं वाग्मिने नमः ओं सत्यवाचे नमः
ओं सत्यविक्रमाय नमः ओं सत्यव्रताय नमः
ओं व्रतधराय नमः ओं सदाहनुमदाश्रिताय नमः
ओं कौशलेन्द्राय नमः ओ खरध्वंसिने नमः
ओं विराधवधपण्डिताय नमः ओं विभीषणपरित्रात्रे नमः
ओं हरकोदण्डखण्डनाय नमः ओं सप्ततालप्रभेत्रे नमः
ओं दशग्रीवशिरोहराय नमः ओं जामदग्न्यमहादर्प-
दलनाय नमः ओं तारकान्ताय नमः
ओं वेदान्तसाराय नमः ओं वेदात्मने नमः
ओं भवरोगभेषजाय नमः ओं दूषणत्रिशिरोहन्त्रे नमः

ओं त्रिमूर्तये नमः ओं त्रिगुणात्मकाय नमः
ओं त्रिविक्रमाय नमः ओं त्रिलोकात्मने नमः
ओं पुण्यचारित्रकीर्तनाय नमः ओं त्रिलोकरक्षकाय नमः
ओं धन्विने नमः ओं दण्डकारण्यकर्तनाय नमः
ओं अहल्याशापशमनाय नमः ओं पितृभक्ताय नमः
ओं वरप्रदाय नमः ओं जितेन्द्रियाय नमः
ओं जितक्रोधाय नमः ओं जितामित्राय नमः
ओं जगद्गुरवे नमः ओं ऋक्षवानरसंघातिने नमः
ओं चित्रकूटसमाश्रयाय नमः ओं जयन्तत्राणवरदाय नमः
ओं सुमित्रापुत्रसेविताय नमः ओं सर्वदेवादिदेवाय नमः
ओं मृतवानरजीवनाय नमः ओं मायामारीचहन्त्रे नमः
ओं महादेवाय नमः ओं महाभुजाय नमः
ओं सर्वदेवस्तुताय नमः ओं सर्वपुण्यफलाधिकाय नमः
ओं सौम्याय नमः ओं ब्रह्मण्याय नमः
ओं मुनिसंस्तुताय नमः ओं महायोगिने नमः
ओं महोदराय नमः ओं सुग्रीवेदियतराज्यप्रदाय नमः
ओं स्मृतसर्वाघनाशनाय नमः ओं आदिपुरुषाय नमः
ओं परमपुरुषाय नमः ओं महापुरुषाय नमः
ओं पुण्योदयाय नमः ओं दयासाराय नमः

ओं पुराणपुरुषोत्तमाय नमः ओं स्मितवक्त्राय नमः
ओं मितभाषिणे नमः ओं पूर्वभाषिणे नमः
ओं राघवाय नमः ओं अनन्तगुणगंभीराय नमः
ओं धीरोदात्तगुणोत्तमाय नमः ओं मायामानुषचारित्राय नमः
ओं महादेवादि पूजिताय नमः
ओं सेतुकृते नमः ओं जितवाराशये नमः
ओं सर्वतीर्थमयाय नमः ओं हरये नमः
ओं श्यामाङ्गाय नमः ओं सुन्दराय नमः
„ शूराय नमः „ पीतवाससे नमः
„ धनुर्धराय नमः „ सर्वयज्ञाधिपतये नमः
„ यज्वने नमः „ जरामरणवर्जिताय नमः
„ विभीषणप्रतिष्ठात्रे नमः „ परमात्मने नमः
„ परस्मै ब्रह्मणे नमः „ सच्चिदानन्दविग्रहाय नमः
„ परस्मै ज्योतिषे नमः „ परस्मै धाम्ने नमः
„ पराकाशाय नमः „ परात्पराय नमः
„ परेशाय नमः „ पारगाय नमः
„ पराय नमः „ सर्वदेवात्मकाय नमः
„ परस्मै नमः

इति श्रीरामाष्टोत्तरशतनामावलिः

॥ अथ लक्ष्म्या-अष्टोत्तरशतनामावलिः ॥

ओं श्री महालक्ष्म्यै नमः	ओं प्रकृत्यै नमः
" विकृत्यै नमः	" विद्यायै नमः
" सर्वभूतहितप्रदायै नमः	" श्रद्धायै नमः
" विभूत्यै नमः	" सुरभ्यै नमः
" परमात्मिकायै नमः	" वाचे नमः
" पद्मालयायै नमः	" पद्मायै नमः
" शुच्यै नमः	" स्वाहायै नमः
" स्वधायै नमः	" सुधायै नमः
" धन्यायै नमः	" हिरण्मयै नमः
" लक्ष्म्यै नमः	" नित्यपुष्टायै नमः
" विभावर्यै नमः	" आदित्यै नमः
" दित्यै नमः	" दीप्तायै नमः
" वसुधायै नमः	" कमलायै नमः
" कान्तायै नमः	" कामक्षायै नमः
" क्रोधसंभवायै नमः	" अनुग्रहप्रदायै नमः
" बुद्ध्यै नमः	" अनघायै नमः
" हरिवल्लभायै नमः	" अशोकायै नमः
" अमृतायै नमः	" दीप्तायै नमः

ओं लोकशोकविनाशिन्यै नमः ओं धर्मनिलयायै नमः
ओं करुणायै नमः ओं लोकमात्रे नमः
ओं पद्मप्रियायै नमः ओं पद्महस्तायै नमः
ओं पद्माक्ष्यै नमः ओं पद्मसुन्दर्यै नमः
ओं पद्मोद्भवायै नमः ओं पद्ममुख्यै नमः
ओं पद्मनाभप्रियायै नमः ओं रमायै नमः
ओं पद्ममालाधरायै नमः ओं देव्यै नमः
ओं पद्मिन्यै नमः ओं पद्मगन्धिन्यै नमः
ओं पुण्यगन्धायै नमः ओं सुप्रसन्नायै नमः
ओं प्रसादाभिमुख्यै नमः ओं प्रभायै नमः
ओं चन्द्रवदनायै नमः ओं चन्द्रायै नमः
ओं चन्द्रसहोदर्यै नमः ओं चतुर्भुजायै नमः
ओं चन्द्ररूपायै नमः ओं इन्दिरायै नमः
ओं इन्दुशीतलायै नमः ओं आह्लादजनन्यै नमः
ओं पुष्ट्यै नमः ओं शिवायै नमः
ओं शिवकर्यै नमः ओं सत्यै नमः
ओं विमलायै नमः ओं विश्वजनन्यै नमः
ओं तुष्ट्यै नमः ओं दारिद्र्यनाशिन्यै नमः
ओं प्रीतिपुष्करिण्यै नमः ओं शुक्लमाल्याम्बरायै नमः

ओं श्रियै नमः　　ओं भास्कर्यै नमः
ओं बिल्वनिलयायै नमः　　ओं वरारोहायै नमः
ओं यशस्विन्यै नमः　　ओं वसुन्धरायै नमः
ओं उदाराङ्गायै नमः　　ओं हरिण्यै नमः
ओं हेममालिन्यै नमः　　ओं धनधान्यकर्यै नमः
ओं सिद्ध्यै नमः　　ओं स्त्रैणसौम्यायै नमः
ओं शुभप्रदायै नमः　　ओं नृपवेश्मतानन्दायै नमः
ओं वरलक्ष्म्यै नमः　　ओं वसुप्रदायै नमः
ओं शुभायै नमः　　ओं हिरण्यप्रकारायै नमः
ओं समुद्रतनयायै नमः　　ओं जयायै नमः
ओं मङ्गलादेव्यै नमः　　ओं विष्णुवक्षस्थलस्थितायै नमः
ओं विष्णुपत्न्यै नमः　　ओं प्रसन्नाक्ष्यै नमः
ओं नारायणसमाश्रितायै नमः ओं दारिद्र्यध्वंसिन्यै नमः
ओं देव्यै नमः　　ओं सर्वोपद्रववारिण्यै नमः
ओं नवदुर्गायै नमः　　ओं महाकाल्यै नमः
ओं ब्रह्मविष्णुशिवात्मिकायै नमः
ओं त्रिकालज्ञानसम्पन्नायै नमः　　ओं भुवनेश्वर्यै नमः

इति लक्ष्म्या-अष्टोत्तरशतनामावलिः

॥ अथ द्वादशश्रीलक्ष्मीनामावलिः ॥

१ ॐ श्रियै नमः
२ ॐ अमृतोद्भवायै नमः
३ ॐ कमलायै नमः
४ ॐ चन्द्रसौन्दर्यै नमः
५ ॐ विष्णुपत्न्यै नमः
६ वैष्णव्यै नमः
७ ॐ वरारोहायै नमः
८ ॐ हरिवल्लभायै नमः
९ ॐ शार्ङ्गिण्यै नमः
१० ॐ देवदेविकायै नमः
११ ॐ लोकसुन्दर्यै नमः
१२ ॐ महालक्ष्म्यै नमः

ॐ नमः श्रियै लोकधात्र्यै ब्रह्ममात्रे नमो नमः ।
नमस्ते पद्मनेत्रायै पद्ममुख्यै नमो नमः ॥
प्रसन्नमुखपद्मायै पद्मकान्त्यै नमो नमः ।
नमोविल्ववनस्थायै विष्णुपत्न्यै नमो नमः ॥
विचित्रक्षौमधारिण्यै पृथुश्रोण्यै नमो नमः ।
पक्वविल्वफलापीन तुङ्गस्तन्यै नमो नमः ॥
संरक्तपद्मपत्राभकरपादतले शुभे ।
संरक्तां गदकेयूर-कांञ्चीनूपुरशोभिते ॥
यक्षकर्दमसंलिप्ते सर्वांगे कनकोज्वले ।
माङ्गल्याभरणैश्चित्रैर्मुक्ताहारैर्विभूषितैः- ॥
स्ताटङ्कैरवतंसैश्च शोभमानमुखाम्बुजे ।
पद्महस्ते नमस्तुभ्यं प्रसीद हरिवल्लभे ॥

ऋक् यजुस्सामरूपायै विद्यायै ते नमो नमः ।
प्रसीदास्मान् कृपादृष्टिपातैर्विलोकयाब्धिजे ॥
नृतवाद्यादि गीतादि पुराणपठनादिभिः ।
राजोपचारैः सकलैः सन्तुष्टोभव राघव ॥
सन्तुष्टो भव राघव
सन्तुष्टो भव

वाराहपुराणान्तर्गत —

अथ श्रीवेङ्कटेश अष्टोत्तरशतनामावलिः

ओं वेङ्कटेशाय नमः — ओं शेषाद्रिनिलयाय नमः
ओं वृषदृग्गोचराय नमः — ओं विष्णवे नमः
ओं सदञ्जनगिरीशाय नमः ओं वृषाद्रिपतये नमः
ओं मेरुपुत्रगिरीशाय नमः ओं सरःस्वामितटिजुषे नमः
ओं कुमाराकल्पसेव्याय नमः ओं वज्रिदृग्विषयाय नमः
ओं सुवर्चलासुतन्यस्तसैन्यापैत्यभराय नमः
ओं रामाय नमः — ओं पद्मनाभाय नमः
ओं सदावायुस्तुताय नमः ओं त्यक्तवैकुण्ठलोकाय नमः

ओं गिरिकुञ्जविहारिणे नमः ओं हरिचन्दनगोत्रेन्द्र-स्वामिने नमः ओं शंखराजन्यनेत्राब्ज-विषयाय नमः ओं वसुपरिचरत्रात्रे नमः

ओं कृष्णाय नमः ओं अब्धिकन्यापरिष्वक्तवक्षसे नमः

ओं वेङ्कटेशाय नमः ओं सनकादिमहायोगिपूजिताय नमः

ओं देवजित्प्रमुखानन्तदैत्यसंघप्रणाशिने नमः

ओं श्वेतद्वीपवसन्मुक्तपूजिताङ्घ्रियुगाय नमः

ओं शेषपर्वतरूपत्वप्रकाशनपराय नमः

ओं सानुस्थापितताक्ष्याय नमः

ओं ताक्ष्याचलनिवासिने नमः ओं मायागूढविमानाय नमः

ओं गरुडस्कन्धवासिने नमः ओं अनन्तशिरसे नमः

ओं अनन्ताक्षाय नमः ओं अनन्तचरणाय नमः

ओं श्रीशैलनिलयाय नमः ओं दामोदराय नमः

ओं नीलमेघनिभाय नमः ओं ब्रह्मादिदेवदुर्दर्शविश्व-रूपाय नमः ओं वैकुण्ठागतसद्धेम-विमानान्तर्गताय नमः ओं अगस्त्याभ्यर्थिताशेष-जनदृग्गोचराय नमः ओं वासुदेवाय नमः

ओं हरये नमः ओं तीर्थपञ्चकवासिने नमः

ओं वामदेवप्रियाय नमः ओं जनकेष्टप्रदाय नमः
ओं मार्कण्डेयमहातीर्थजातपुण्यप्रदाय नमः
ओं वाक्यपतिब्रह्मदात्रे नमः ओं चन्द्रलावण्यदायिने नमः
ओं नारायणनगेशाय नमः ओं ब्रह्मकल्पोत्सवाय नमः
ओं शंखचक्रवरानम्रलसत्करतलाय नमः
ओं श्रवणमृगमदासक्तविग्रहाय नमः
ओं केशवाय नमः ओं नित्ययौवनमूर्तये नमः
ओं अर्थितार्थप्रदात्रे नमः ओं विश्वतीर्थाघहारिणे नमः
ओं तीर्थस्वामिसरःस्नातजनाभीष्टप्रदायिने नमः
ओं कुमारधारिकावासस्कन्दाभीष्टप्रदाय नमः
ओं जानुदघ्नसमुद्भूतपोत्रिणे नमः ओं कूर्ममूर्तये नमः
ओं किन्नरद्वन्द्वशापान्तप्रदात्रे नमः ओं विभवे नमः
ओं वैखानसमुनिश्रेष्ठपूजिताय नमः
ओं सिंहाचलनिवासाय नमः ओं श्रीमन्नारायणाय नमः
ओं सद्भक्तनीलकण्ठार्च्यनृसिंहाय नमः
ओं कुमुदाक्षगणश्रेष्ठसैन्यपत्यप्रदाय नमः
ओं दुर्मेधस्प्राणहर्त्रे नमः ओं श्रीधराय नमः
ओं क्षत्रियान्तकरामाय नमः ओं मत्स्यरूपाय नमः

ओं पाण्डवारिप्रहर्त्रे नमः ओं श्रीकराय नमः
ओं उपत्यकाप्रदेशस्थशंकरध्यातमूर्तये नमः
ओं रुक्माब्जसरसोकूललक्ष्मीकृततपस्विने नमः
ओं लसत् लक्ष्मीकराम्भोजदत्तकह्लारकस्रजे नमः
ओं शालग्रामनिवासाय नमः ओं सुतदृग्गोचराय नमः
ओं नारायणार्थिताशेषजनदृग्विषयाय नमः
ओं मृगयारसिकाय नमः ओं वृषभासुरहारिणे नमः
ओं अञ्जनागोत्रपतये नमः ओं वृषभाचलवासिने नमः
ओं अञ्जनासुतदात्रे नमः ओं माधवीयाघहारिणे नमः
ओं प्रियप्रियाङ्गवुभूत्ताय नमः ओं श्वेतकोलवराय नमः
ओं नीलधेनुपयोधारासेकदेहोद्भवाय नमः
ओं शंकरप्रियमित्राय नमः ओं चोलपुत्रप्रियाय नमः
ओं सुधर्मिणीसुचैतन्यप्रदात्रे नमः ओं मधुघातिने नमः
ओं कृष्णाख्यविप्रवेदान्तदेशिकत्वप्रदाय नमः
ओं वराहाचलनासाय नमः ओं वलभद्राय नमः
ओं त्रिविक्रमाय नमः ओं महते नमः
ओं हृषीकेशाय नमः ओं अच्युताय नमः
ओं नीलाद्रिनिलयाय नमः ओं क्षीराब्धिनाथाय नमः

ॐ वैकुण्ठाचलवासिने नमः
ॐ अनन्ताय नमः
सौम्यरूपाय नमः
भीष्टदायिने नमः
फलदायिने नमः
ॐ श्रीनिवासाय नमः
ॐ मुकुन्दाय नमः
ॐ विरञ्चाभ्यर्थितानीत-
ॐ सुवर्णमुखरिस्नातमनुजा-
ॐ हलायुधजगत्तीर्थसमस्त-
ॐ गोविन्दाय नमः

इति श्रीवेङ्कटेश-अष्टोत्तरशतनामावलिः

॥ मंगल आरती ॥

श्रियः कान्ताय देवाय कल्याणनिधयेऽर्थिनाम् ।
श्रीवैकुण्ठनिवासाय श्रीनिवासाय मंगलम् ॥१॥
लक्ष्मीशविभ्रमालोलसभ्रूविभ्रमचक्षुषे ।
चक्षुषे सर्वलोकानां वेंकटेशाय मंगलम् ॥२॥
कमलाकुचकस्तुरी कर्दमाङ्कितवक्षसे ।
यादवाद्रिनिवासाय सम्पत्पुत्राय मंगलम् ॥३॥
सुस्मिताय सुनाशाय सुन्दरे सुदृशे भ्रुवे ।
सुललाटकिरीटाय रङ्गराजाय मंगलम् ॥४॥

मंगलं कोशलेन्द्राय महनीय गुणात्मने ।
चक्रवर्तितनूजाय सार्वभौमाय मंगलम् ॥५॥
श्रीमद्गोपालवालाय गोदाभिष्टप्रदायिने ।
श्रीसत्यासाहितायास्तुकृष्णदेवाय मंगलम् ॥६॥
नीलाचलनिवासाय नित्याय परमात्मने ।
सुभद्राप्राणनाथाय जगन्नाथाय मंगलम् ॥७॥
आप्तकामाय पूर्णाय पुरुषोत्तमवासिने ।
परस्मै पुरुषायास्तु जगन्नाथाय मंगलम् ॥८॥
सुभद्राप्राणनाथाय सुभद्राह्वानशालिने ।
वलभद्रसुनाथाय जगन्नाथाय मंगलम् ॥९॥
आजन्मना षोडशाब्दात्स्तन्याद्यनभिलाषिणे ।
श्रीशानुभवयुष्टाय शठकोपाय मंगलम् ॥१०॥
कूरेशकूरुकानाथ दशरथ्यादिदेशिकैः ।
तच्छिष्याभ्यर्थिने तस्मै यतिराजाय मंगलम् ॥११॥
मंगलाशासनपरैर्मदाचार्य्यपुरोगमैः ।
सर्वैश्चपूर्वैराचार्यैः सत्कृतायास्तु मंगलम् ॥१२॥

❀ तीर्थ तुलसीदान के समय नित्य श्लोक ❀

सर्वदेशादिशाकालेष्वव्याहतपराक्रमा ।
रामानुजार्यदिव्याज्ञा वर्धतामभिवर्द्धताम् ॥१॥
रामानुजार्यदिव्याज्ञा प्रतिवासरमुज्ज्वला ।
दिगन्तव्यापिनी भूयात्सा हि लोकहितैपिणी ॥२॥
श्रीमन् श्रीरङ्ग श्रियमनुपद्रवामनुदिनं संवर्द्धय ।
श्रीमन् श्रीरङ्ग श्रियमनुपद्रवामनुदिनं संवर्द्धय ॥३॥
नमः श्रीशैलनाथाय कुन्तीनगरजन्मने ।
प्रसादलब्धपरमप्राप्यकैङ्कर्यशालिने ॥४॥
श्रीशैलेशदयापात्रं धीभक्त्यादिगुणार्णवम् ।
यतीन्द्रप्रवणं वन्दे रम्यजामातरं मुनिम् ॥५॥
लक्ष्मीनाथसमारम्भां नाथयामुनमध्यमाम् ।
अस्मदाचार्यपर्यन्तां वन्दे गुरुपरम्पराम् ॥६॥
यो नित्यमच्युतपदाम्बुजयुग्मरुक्म—
व्यामोहतस्तदितराणि तृणाय मेने ॥
अस्मद् गुरोर्भगवतोऽस्य दयैकसिन्धो ।
रामानुजस्य चरणौ शरणं प्रपद्ये ॥७॥
मातापितायुवतस्तनयाविभूतिः,
सर्वं यदेव नियमेन मदन्वयानाम् ।

आद्यस्य नः कुलपतेर्वकुलाभिरामम् ,
श्रीमत्तदङ्घ्रियुगलं प्रणमामि मूर्ध्ना ॥८॥

भूतं सरश्चमहदाह्वय भट्टनाथ,
श्रीभक्तिसारकुलशेखरयोगिवाहान् ॥
भक्तांघ्रिरेणु परकालयतीन्द्रमिश्रान् ।
श्रीमत्परांकुशमुनिं प्रणतोऽस्मि नित्यम् ॥९॥

गुरुमुखनधीत्य प्राहवेदानशेषान्
नरपतिपरिक्लृप्तं शुल्कमादातुकामः
श्वसुरममरवन्द्यं रंगनाथस्य साक्षात् ।
द्विजकुलतिलकं तं विष्णुचित्तं नमामि ॥१०॥

अस्मद्देशिकमस्मदीय परमाचार्यानशेषान्गुरून् ,
श्रीमल्लक्ष्मणयोगिपुङ्गवमहापूर्णौ मुनिं यामुनम् ।
रामं पद्मविलोचनं मुनिवरं नाथं शठद्वेषिणम् ,
सेनेशं श्रियमिन्दिरासहचरं नारायणं संश्रये ॥११॥

मन्दाकिनी सलिलसिक्तपदारविन्दम् ,
दिव्याब्जचक्रसुगदाप्तकरारविन्दम् ॥
ब्रह्मेशशेषविहगेशसमर्चिताङ्गम् ,
सिद्धाश्रमस्थमनिशं भगवन्तमीडे ॥१२॥

वेदान्तदेशिककटाक्षविवृद्धबोधं
कान्तोपयन्तृयमिनः करुणैकपात्रम् ।
वत्सान्ववायमनवद्यगुणैरुपेतं
भक्त्या भजामि परवादिभयङ्करार्यम् ॥१३॥

श्रीवत्सवंशाम्बुधिपूर्णचन्द्रम्
श्रीश्रीनिवासार्यगुरोस्तनूजम् ।
तत्रातवेदार्थयुगान्तसार-
मनन्तवर्यं प्रणमामि नित्यम् ॥१४॥

श्रीवत्सवंशकलशोदधिपूर्णचन्द्रम्
श्रीकृष्णसूरिपदपङ्कजभृङ्गराजम् ।
श्रीरङ्गवेङ्कटगुरूत्तमलब्धबोधम्
भक्त्या भजामि गुरुवर्यमनन्तसूरिम् ॥१५॥

श्रीवादिभीकरगुरूत्तमवंशसिन्धु
शीतांशुनन्त गुरुवर्य्यपदाब्जभृङ्गम् ।
श्रीगौतमान्वयपयोनिधिपूर्णचन्द्रम्
श्रीश्रीपतिं गुरुवरं शरणं प्रपद्ये ॥१६॥

श्रीवत्सवंशकलशोदधिपूर्णचन्द्रम्
श्रीपत्यभिख्यगुरुवर्य्यपदाब्जभृङ्गम् ।

शान्त्यादिसद्गुणनिधिं परमार्थनिष्ठम्
नौम्यच्युतं गुरुवरं शिरसा सदाहम् ॥१७॥

अच्युतार्घपदाम्भोजचञ्चरीकायितान्तरम् ।
कान्यकुब्जकुलोत्पन्नं विष्णुचित्तं गुरुम्भजे ॥१८॥

श्रीकान्यकुब्जकुलवारिधिपूर्णचन्द्रम्
श्रीविष्णुचित्तगुरुवर्यपदाब्जभृङ्गम् ।
ज्ञानादिसद्गुणगणौघमहाम्बुराशिम्
ध्यायामि साधुशरणाख्यगुरुं सदाहम् ॥१९॥

श्रीवत्सवंशकलशोदधिपूर्णचन्द्र-
मार्यस्य साधुशरणाय कृपैकपात्रम् ।
ज्ञानादिसद्गुणनिधिं करुणानिधानम्
श्रीरामकृष्णगुरुवर्यमहं प्रपद्ये ॥२०॥

काषायं यज्ञसूत्रं शुचिवपुषितथा चोर्ध्वपुण्ड्रं च भाले
यस्यास्ते दत्तहस्ते कलिकुमतिगिरीन्द्रेन्द्रवज्रं त्रिदण्डम् ।
संसाराग्निप्रशान्त्यैभृतजलममलं दारुपात्रं पवित्रम्
श्रीविष्वक्सेनसूरेः पदकमलयुगं श्रेयसे संश्रयामि ॥२१॥

श्रीमते रम्यजामातृमुनीन्द्राय महात्मने ।
श्रीरङ्गवासिने भूयान्नित्यश्रीर्नित्यमङ्गलम् ॥२२॥

मंगलं यतिराजाय श्रीभाष्यामृतदायिने ।
सौलभ्यपरिपूर्णाय महापूर्णाय मङ्गलम् ॥२३॥
मंगलं गुरुवर्य्याय मंगलं गुणसिन्धवे ।
वादिभीतिकराय्र्याय नित्यश्रीर्नित्यमंगलम् ॥२४॥
जयति यतिराज फणिराज अवतारमणे ।
प्रबलपापण्डतमहरणभानो विजयी भव विजयी भव ॥२५॥

❀ अथ प्रणाम श्लोक ❀

अमर्यादः क्षुद्रश्चलमतिरसूया प्रसवभूः ।
कृतघ्नो दुर्मानी स्मरपरवशोवञ्चनपरः ॥
नृशंसः पापिष्ठः कथमहमितो दुःखजलधे-
रपारादुत्तीर्णस्तव परिचरेयं चरणयोः ॥२६॥

❀ इति सम्पूर्णम् ❀

श्रीपराशरभट्टार्यः श्रीरङ्गेशपुरोहितः ।
श्रीवत्साङ्कसुतः श्रीमान् श्रेयसे मेऽस्तु भूयसे ॥२७॥

❀ अष्ट श्लोकी ❀

अकारार्थो विष्णुर्जगदुदयरक्षा प्रलयकृत्—
मकारार्थो जीवस्तदुपकरणं वैष्णवमिदम् ।
उकारोऽनन्याहं नियमयति सम्बन्धमनयो—
स्त्रयीसारस्त्र्यात्मा प्रणव इममर्थं समदिशत् ॥१॥

मन्त्रब्रह्मणि मध्यमेन नमसा पुंसः स्वरूपं गति—
गम्यं शिक्षितमीक्षितेन पुरतः पश्चादपि स्थानतः।
स्वातन्त्र्यं निजरक्षणं समुचिता वृत्तिश्च नान्योचिता
तस्यैवेति हरेर्विविच्य कथितं स्वस्यापि नार्हं ततः ॥२॥

अकारार्थायैव स्वमहमथ मह्यं न निवहा
नराणां नित्यानामयनमिति नारायणपदम्।
यमाहास्मै कालं सकलमपि सर्वत्र सकला—
स्ववस्थास्वाविः स्युर्मम सहजकैङ्कर्यविधयः ॥३॥

देहासक्तात्मबुद्धिर्यदि भवति पदं साधु विद्यात्तृतीयं,
स्वातन्त्र्यान्धो यदि स्यात् प्रथममितरशेषत्वधीश्चेद्द्वितीयम्
आत्मत्राणोन्मुखश्चेन्नम इति च पदं बान्धवाभासलोलः
शब्दं नारायणाख्यं विषयचपलधीश्चेच्चतुर्थीं प्रपन्नः ॥४॥

नेतृत्वं नित्ययोगं समुचितगुणजातं तनुख्यापनंचो—
पायं कर्तव्यभागं त्वथ मिथुनपरं प्राप्यमेवं प्रसिद्धम्।
स्वामित्वं प्रार्थनां च प्रबलतरविरोधिप्रहाणं दशैतान्
मन्तारं त्रायते चेत्यधिगतनिगमः षटपदोऽयं द्विखण्डः ॥५॥

ईशानां जगतामधीशदयितां नित्यानपायां श्रियं
संश्रित्याश्रयणोचिताखिलगुणस्याङ्घ्री हरेराश्रये।

इष्टोपायतया श्रिया च सहितायात्मेश्वरायार्थये
कर्तुं दास्यमशेषमप्रतिहतं नित्यं त्वहं निर्ममः ॥६॥
मत्प्राप्त्यर्थतया मयोक्तमखिलं सन्त्यज्य धर्मं पुन-
र्मामेकं मदवाप्तये शरणमित्यार्तोऽवसायं कुरु ।
त्वामेवं व्यवसाययुक्तमखिलज्ञानादिपूर्णो ह्यहं,
मत्प्राप्तिप्रतिबन्धकैर्विरहितं कुर्यां शुचं मा कृथाः ॥७॥
निश्चित्य त्वदधीनतां मयि सदा कर्माद्युपायान् हरे
कर्तुं त्यक्तुमपिप्रपत्तुमनलं सीदामि दुःखाकुलः ।
एतज्ज्ञानमुपेयुषो मम पुनः सर्वापराधक्षयं ।
कर्तासीति दृढोऽस्मि ते तु चरमं वाक्यं स्मरन् सारथेः ॥८॥

॥ इत्यष्टश्लोकी ॥

अथ श्रीकोशलेशसदननित्यपाठः

❀ अथ वरदवल्लभास्तोत्रम् ❀

यत्पदाम्भोरुहध्यानविध्वस्ताशेषकल्मषः ।
वस्तुतामुपयातोऽहं यामुनेयं नमामि तम् ॥
कान्तस्ते पुरुषोत्तमः फणिपतिः शय्यासनं वाहनं
वेदात्मा विहगेश्वरो जवनिका माया जगन्मोहिनी ।

ब्रह्मेशादिसुरव्रजः सदयितस्त्वद्दासदासीगणः
श्रीरित्येव च नाम ते भगवति ब्रूमः कथं त्वां वयम् ॥१॥
यस्यास्ते महिमानमात्मन इव त्वद्वल्लभोऽपिप्रभु-
र्नालं मातुमियत्तया निरवधिं नित्यानुकूलं स्वतः ॥
तां त्वा दास इति प्रपन्न इति च स्तोष्याम्यहं निर्भयो
लोकैकेश्वरि लोकनाथदयिते दान्ते दयान्ते विदन् ॥२॥
ईषत्त्वत्करुणानिरीक्षणसुधासन्धुक्षणाद्रक्ष्यते
नष्टं प्राक्तदलाभतस्त्रिभुवनं संप्रत्यनन्तोदयम् ॥
श्रेयो नह्यरविन्दलोचममनः कान्ताप्रसादादृते
संसृत्यक्षरवैष्णवाध्वसु नृणां सम्भाव्यते कर्हिचित् ॥३॥
शान्तानन्तमहाविभूतिपरमं यद्ब्रह्मरूपं हरे-
र्मूर्तं ब्रह्म ततोऽपि यत्प्रियतरं रूपंयदत्यद्भुतम् ॥
यान्यन्यानि यथासुखं विहरतो रूपाणि सर्वाणि ता-
न्याहुः स्वैरनुरूपरूपविभवैर्गाढोपगूढानि ते ॥४॥
आकारत्रयसंपन्नामरविन्दनिवासिनीम् ॥
अशेषजगदीशित्रीं वन्दे वरदवल्लभाम् ॥५५

आकारत्रयसंपन्नामरविन्दनिवासिनीम् ॥
अशेषजगदीशित्रीं वन्दे वरदवल्लभाम् ॥

इति वरदवल्लभास्तोत्रम् सम्पूर्णम्

श्रीरङ्गमङ्गलमहोत्सववर्द्धनाय
वेदान्तपांक्थपरमार्थसमर्थनाय
कैङ्कर्यलक्षणविलक्षणमोक्षभाजो
रामानुजो विजयते यतिराजराजः

श्रीरङ्गमङ्गलमणिं करुणानिवासं
श्रीवेङ्कटाद्रिशिखरालयकालमेघम्
श्रीहस्तिशैलशिखरोज्ज्वलपारिजातं
श्रीशं नमामि शिरसा यदुशैलदीपम्

काषायशोभिकमनीयशिखानिवेशं
दण्डत्रयोज्ज्वलकरं विमलोपवीतम्
उद्यद्दिनेशनिभमुल्लसदूर्ध्वपुण्ड्रं
रूपं तवास्तु यतिराजदृशोर्ममाग्रे

भक्तामृतं विश्वजनानुमोदनं
सर्वार्थदं श्रीशठकोपवाङ्मयम्
सहस्रशाखोपनिषत्समागमं
नमाम्यहं द्राविडवेदसागरम्

नमामि रामानुजपादपङ्कजं
वदामि रामानुजनाममनिर्मलम्

स्मरामि रामानुजदिव्यविग्रहं
करोमि रामानुजदासदास्यताम्
रामानुजस्य पदपंकजमाश्रयामि
रामानुजस्य करुणामनुसंददामि
रामानुजस्य जनपादरजो वहामि
रामानुजाय नम इत्यनिशं वदामि
बौद्धान्धकारपरिहारदिवाकराय
श्रीवैष्णवांबुनिधिपूर्णनिशाकराय
अद्वैतवादिकरियूथमृगाधिपाय
तस्मै नमोस्तु सततं यतिपुङ्गवाय
त्रिदण्डहस्तंसितयज्ञसूत्रं
काषायवस्त्रं लसदूर्ध्व पुण्ड्रम्
रथाङ्गशङ्खाङ्कितवाहुमूलं
रामानुजार्यं शरणं प्रपद्ये
साकेते कटरापणे सुललिते
दक्षेसरय्वास्तटे
भव्येनव्यसुकोशलेशसदने
शान्ताकृतिं सुन्दरम्

दिव्यं तं विबुधेश्वरार्चितपदं
कोदण्डपाणिं प्रभुम्
सीतालक्ष्मणवातजातसहितम्
श्रीरामचन्द्रं भजे

वेदान्तदेशिककटाक्षविवृद्धबोधं
कान्तोपयंतृयमिनः करुणैकपात्रम्
वत्सान्ववायमनवद्यगुणैरुपेतं
भक्त्या भजामि परवादिभयंकरार्यम्

श्रीवत्सवंशाम्बुधिपूर्णचन्द्रं
श्रीश्रीनिवासार्यगुरोस्तनूजम्
तत्प्राप्तवेदान्तयुगार्थसार-
मनन्तवर्यं प्रणमामि नित्यम्

श्रीवत्सवंशकलशोदधिपूर्णचन्द्रं
श्रीकृष्णसूरिपदपङ्कजभृङ्गराजम्
श्रीरङ्गवेङ्कटगुरूत्तमलब्धबोधम्
भक्त्या भजामि गुरुवर्यमनन्तसूरिम्

श्रीवादिभीकरगुरूत्तमवंशसिन्धु-
शीतांशुमनन्तगुरुवर्यपदाब्जभृङ्गम्

श्रीगौतमान्वयपयोनिधिपूर्णचन्द्रं

श्रीश्रीपतिं गुरुवरं शरणं प्रपद्ये

श्रीवत्सवंशकलशोदधिपूर्णचन्द्रं

श्रीपत्यभिख्यगुरुवर्यपदाब्जभृङ्गम्

शान्त्यादिसद्गुणनिधिं परमार्थनिष्ठं

नौम्यच्युतं गुरुवरं शिरसा सदाऽहम्

अच्युतार्यपदाम्भोजचञ्चरीकायितान्तरम्

कान्यकुब्जकुलोत्पन्नं विष्णुचित्तं गुरुम्भजे

श्रीकान्यकुब्जकुलवारिधिपूर्णचन्द्रं

श्रीविष्णुचित्तगुरुवर्यपदाब्जभृङ्गम्

ज्ञानादिसद्गुणगणौघमहाम्बुराशिं

ध्यायामि साधुशरणाख्यगुरुं सदाऽहम्

श्रीवत्सवंशकलशोदधिपूर्णचन्द्रं

आर्यस्य साधुशरणस्य कृपैकपात्रम्

ज्ञानादिसद्गुणनिधिं करुणानिधानं

श्रीरामकृष्णगुरुवर्यमहं प्रपद्ये

काषायं यज्ञसूत्रंशुचिवपुषि तथा

चोर्ध्वपुण्ड्रं च भाले

यस्यास्ते दक्षहस्ते कलिकुमतिगिरीन्द्रेन्द्रवज्रं त्रिदण्डम्
संसाराग्निप्रशान्त्यैभृतजलममलम् दारुपात्रं पवित्रम्
श्रीविष्वक्सेनसूरेः पदकमलयुगं श्रेयसे संश्रयामि

श्रीमते रम्यजामातृमुनीन्द्राय महात्मने
श्रीरङ्गवासिने भूयान्नित्यश्रीर्नित्यमङ्गलम्

मङ्गलं यतिराजाय श्रीभाष्यार्थप्रदायिने
सौलभ्यपरिपूर्णाय महापूर्णाय मङ्गलम्

मङ्गलं गुरुवर्याय मंगलं गुणसिन्धवे
वादिभीतिकरार्याय नित्यश्रीर्नित्यमङ्गलम्

जयति यतिराज फणिराज अवतारमणे प्रबलपाषण्ड
तमहरणभानो विजयी भव विजयी भव विजयी भव

❀ अथालवन्दारस्तोत्रम् ❀

स्वादयन्निह सर्वेषां त्रय्यन्तार्थं सुदुर्ग्रहम् ॥
स्तोत्रयामास योगीन्द्रस्तं वन्दे यामुनाह्वयम् ॥१॥

नमो नमो यामुनाय यामुनाय नमो नमः ॥
नमो नमो यामुनाय यामुनाय नमो नमः ॥२॥

नमो यामुनपादाब्जरेणुभिः पावितात्मने ॥
विदिताखिलवेद्याय गुरवे विदितात्मने ॥३॥
नमोऽचिंत्याद्भुताक्लिष्टज्ञानवैराग्यराशये ॥
नाथाय मुनयेऽगाधभगवद्भक्तिसिंधवे ॥४॥

तस्मै नमो मधुजिदंघ्रिसरोजतत्वज्ञानानुरागमहिमातिशयांतसीम्ने ॥ नाथाय नाथमुनयेऽत्र परत्र चापि नित्यं यदीयचरणौ शरणं मदीयम् ॥५॥ भूयो नमोऽपरिमिताच्युतभक्तितत्वज्ञानामृताब्धिपरिवाहशुभैर्वचोभिः ॥ लोकेऽवतीर्णपरमार्थसमग्रभक्तियोगायनाथमुनये यमिनां वराय ॥६॥ तत्वेन यश्चिदचिदीश्वरतत्स्वभाव भोगापवर्गतदुपायगतीरुदारः ॥ संदर्शयन्निरमिमीत पुराणरत्नं तस्मै नमो मुनिवराय पराशराय ॥७॥ मातापितायुवतयस्तनयाविभूतिः सर्वं यदेव नियमेन मदन्वयानाम् ॥ आद्यस्य नः कुलपतेर्वकुलाभिरामं श्रीमत्तदंघ्रियुगलं प्रणमामि मूर्ध्ना ॥८॥ यन्मूर्ध्नि मे श्रुतिशिरस्सु च भाति यस्मिन्नस्मन्मनोरथपथः सकलः समेति ॥ स्तोष्यामि नः कुलधनं कुलदैवतं तत्पादारविन्दमरविन्दविलोचनस्य ॥९॥ तत्वेन यस्य महिमार्णवशीकराणुःशक्यो न मातुमपिशर्वपितामहाद्यैः ॥ कर्तु

तदीयमहिमस्तुतिमुद्यताय मह्यं नमोस्तु कवये निरपत्र-पाय ॥१०॥ यद्वाश्रमावधियथामतिवाप्यशक्तः स्तौम्येवमेव खलु तेऽपि सदा स्तुवन्तः॥ वेदाश्चतुर्मुखमुखाश्चमहार्णवान्तः कोमज्जतोरणुकुलाचलयोर्विशेषः ॥११॥ किंचैपशक्त्यतिशये ननु तेऽनुकंप्यः स्तोतापितुस्तुतिकृतेन परिश्रमेण ॥ तत्र श्रमस्तु सुलभो मम मंदबुद्धेरित्युद्यमोऽयमुचितो मम चाऽब्जनेत्र ॥१२॥ नावेक्षसे यदि ततो भुवनान्यमूनि नालं प्रभो भवितुमेव कुतः प्रवृत्तिः॥ एवं निसर्गसुहृदि त्वयि सर्वजन्तोः स्वामिन्नचित्रमिदमाश्रितवत्सलत्वम् ॥१३॥ स्वाभाविकानवधिकातिशयेशितृत्वं नारायण त्वयि न मृष्यति वैदिकः कः॥ ब्रह्मा शिवः शतमखः परमस्वराडित्येतेऽपि यस्य महिमार्णवविप्रुषस्ते ॥१४॥ कः श्रीः श्रियः परम-सत्वसमाश्रयः कः कः पुंडरीकनयनः पुरुषोत्तमः कः॥ कस्या-युतायुतशतैककलांशकांशे विश्वं विचित्रत्चदचित्प्रविभाग-वृत्तम् ॥१५॥ वेदापहारगुरुपातकदैत्यपीडाद्यापद्विमोचन-महिष्ठफलप्रदानैः॥ कोऽन्यः प्रजापशुपतिः परिपाति कस्य पादोदकेन स शिवः स्वशिरोधृतेन ॥१६॥ कस्योदरे हर-विरिञ्चिमुखः प्रपंचः कोरक्षतीममजनिष्ट च कस्य नाभेः॥

क्रान्त्वा निगीर्य पुनरुद्गिरतित्वदन्यः कः केन चैष परवानिति शक्यशङ्कः ॥१७॥ त्वां शीलरूपचरितैः परमप्रकृष्टसत्त्वेन सात्त्विकतया प्रबलैश्च शास्त्रैः॥ प्रख्यातदैवपरमार्थविदांमतैश्च- नैवासुरप्रकृतयः प्रभवन्ति बोद्धुम् ॥१८॥ उल्लघित- त्रिविधसीमसमातिशायिसंभावनं तव परिव्रढिमस्वभावम् ॥ मायाबलेन भवतापि निगूह्यमानं पश्यन्ति केचिदनिशं त्वद- नन्यभावाः ॥१९॥ यदण्डमण्डान्तरगोचरं च यद्द- शोत्तराण्यावरणानि यानि च ॥ गुणाः प्रधानं पुरुषः परं पदं परात्परं ब्रह्म च ते विभूतयः ॥२०॥ वशी वदान्यो गुणवानृजुः शुचिर्मृदुर्दयालुर्मधुरः स्थिरः समः ॥ कृती कृतज्ञस्त्वमसि स्वभावतः समस्तकल्याणगुणामृतोदधिः॥२१ उपर्युपर्यब्जभुवोऽपि पूरुषान् प्रकल्प्य ते ये शतमित्यनु- क्रमात् ॥ गिरस्त्वदेकैकगुणावधीप्सया सदा स्थितानोद्य- मतोऽतिशेरते ॥२२॥ त्वदाश्रितानां जगदुद्भवस्थितिप्रणाश- संसारविमोचनादयः॥ भवन्ति लीलाविधयश्चवैदिकास्त्वदीय गम्भीरमनोनुसारिणः ॥२३॥ नमो नमो वाङ्मनसाति- भूमये नमो नमो वाङ्मनसैकभूमये ॥ नमो नमोऽनन्त- महाविभूतये नमो नमोऽनन्तदयैकसिन्धवे ॥२४॥ न धर्मनिष्ठोऽस्मि न चात्मवेदी न भक्तिमांस्त्वच्चरणारविन्दे ॥

अकिंचनोऽनन्यगतिः शरण्यं त्वत्पादमूलं शरणं प्रपद्ये ॥२५

न निन्दितं कर्म तदस्ति लोके सहस्रशो यन्न मया व्यधायि॥

सोऽहं विपाकावसरे मुकुन्द क्रन्दामि संप्रत्यगतिस्तवाग्रे ॥२६

निमज्जतोऽनन्तभवार्णवान्तश्चिराय मे कूलमिवासि लब्धः ॥

त्वयापि लब्धं भगवन्निदानीमनुत्तमं पात्रमिदं दयायाः ॥२७

अभूतपूर्वं मम भावि किं वा सर्वं सहे मे सहजं हि दुःखम् ॥

किंतु त्वदग्रे शरणागतानां पराभवो नाथ न तेऽनुरूपः ॥२८

निरासकस्यापि न तावदुत्सहे महेश हातुं तव पादपङ्कजम् ॥

रुषा निरस्तोऽपि शिशुः स्तनन्धयो न जातु मातुश्चरणौ

जिहासति ॥२९॥ तवामृतस्यन्दिनि पादपङ्कजे निवेशितात्मा कथमन्यदिच्छति ॥ स्थितेऽरविन्दे मकरन्दनिर्भरे मधुव्रतो नेक्षुरसं हि वीक्षते॥३०॥ त्वदङ्घ्रिमुद्दिश्य कदापि केनचिद्यथा तथा वापि सकृत्कृतोञ्जलिः॥ तथैव मुष्णात्यशुभान्यशेषतः शुभानि पुष्णाति न जातु हीयते ॥३१॥ उदीर्णसंसारदवाशुशुक्षणिं क्षणेन निर्वाप्य परां च निर्वृतिम् ॥ प्रयच्छति त्वच्चरणारुणाम्बुजद्वयानुरागामृतसिंधुशीकरः ॥३२॥ विलासविक्रांतपरावरालयं नमस्यदार्तिक्षपणे कृतक्षणम् ॥ धनं मदीयं तव पादपङ्कजं कदा नु

साक्षात्करवाणि चक्षुषा ॥२३॥ कदा पुनः शंखरथाङ्ग-कल्पकध्वजारविन्दांकुशवज्रलाञ्छनम् ॥ त्रिविक्रम त्वच्चरणाम्बुजद्वयं मदीयमूर्द्धानमलं करिष्यति ॥२४॥ विराजमानोज्ज्वलपीतवाससं स्मितातसीसूनसमामलच्छ-विम् । निमग्ननाभिं तनुमध्यमुल्लसद्विशालवक्षःस्थलशोभि-लक्षणम् ॥२५॥ चकासतं ज्याकिणकर्कशैः शुभैश्चतुर्भि-राजानुविलंबिभिर्भुजैः ॥ प्रियावतं सोत्पलकर्णभूषणश्लथा-लकाबंधविमर्द शंसिभिः॥२६॥ उदग्रपीनांसविलंबिकुंडलाल-कावलीबन्धुरकम्बुकन्धरम् । मुखश्रियान्यक्कृतपूर्णनिर्मला-मृतांशुबिंबाम्बुरुहोज्ज्वलश्रियम्॥२७॥प्रबुद्धमुग्धाम्बुजचारु-लोचनं सविभ्रमभ्रूलतमुज्ज्वलाधरम् ॥ शुचिस्मितं कोमल-गण्डमुन्नसंललाटपर्यंतविलंबितालकम् ॥२८॥ स्फुरत्कीरी-टांगदहारकंठिकामणीन्द्रकाञ्चीगुणनूपुरादिभिः ॥ रथांग-शंखासिगदाधनुर्वरैर्ल्लसत्तुलस्या वनमालयोज्ज्वलम् ॥२९ चकर्थ यस्या भवनंभुजान्तरं तवप्रियं धाम यदीयजन्मभूः॥ जगत्समस्तं यदपांगसंश्रयं यदर्थमम्भोधिरमन्थ्यबन्धि च ॥४०॥ स्ववैश्वरूप्येण सदानुभूतयाप्यपूर्ववद्विस्मयमाद-धानया ॥ गुणेन रूपेण विलासचेष्टितैः सदा तवैवोचितया तव श्रिया ॥४१॥ तया सहासीनमनन्तभोगिनि प्रकृष्ट-

विज्ञानबलैकधामनि ॥ फणामणिव्रातमयूखमंडलप्रकाश-
मानोदरदिव्यधामनि ॥४२॥ निवासशय्यासनपादुकांशु-
कोपधानवर्षातपवारणादिभिः ॥ शरीरभेदैस्तव शेषतां
गतैर्यथोचितं शेष ईतीर्यते जनैः ॥४३॥ दासः सखा
वाहनमासनं ध्वजो यस्ते वितानं व्यजनं त्रयीमयः ॥
उपस्थितं तेन पुरोगरुत्मता त्वदङ्घ्रिसम्मर्द किणांक-
शोभिना ॥४४॥ त्वदीयभुक्तोज्झितशेषभोजिना त्वया
विसृष्टात्मभरेण यद्यथा ॥ प्रियेण सेनापतिना निवेदितं
तथानुजानन्तमुदारवीक्षणैः ॥४५॥ हताखिलक्लेशमलैः
स्वभावतः सदानुकूल्यैकरसैस्तवोचितैः॥ गृहीततत्तत्परिचार-
साधनैर्निषेव्यमाणं सचिवैर्यथोचितम् ॥४६॥ अपूर्वनानार-
सभावनिर्भरप्रबुद्धया मुग्धविदग्धलीलया ॥ क्षणाणुवत्क्षिप्त-
परादिकालया प्रहर्षयन्तं महिषीं महाभुजम् ॥४७॥
अचिन्त्यदिव्याद्भुतनित्ययौवनस्वभावलावण्यमयामृतो -
दधिम् ॥ श्रियः श्रियं भक्तजनैकजीवितं समर्थमापत्सखमर्थि-
कल्पकम् ॥४८॥ भवन्तमेवानुचरन्निरन्तरं प्रशांतनिःशेष-
मनोरथान्तरः ॥ कदाहमैकांतिकनित्यकिंकरः प्रहर्ष-
यिष्यामि सनाथजीवितम् ॥४९॥ धिगशुचिमविनीतं

निर्दयं मामलज्जं परमपुरुष योऽहं योगिवर्याग्रगण्यैः ॥ विधिशिवसनकाद्यैर्ध्यातुमत्यन्तदूरं तव परिजनभावं कामये कामवृत्तः ॥५०॥ अपराधसहस्रभाजनं पतितं भीम-भवार्णवोदरे ॥ अगतिं शरणागतं हरे कृपया केवलमात्म-सात्कुरु ॥५१॥ अविवेकघनान्धदिङ्मुखे बहुधा सन्तत-दुःख वर्षिणी ॥ भगवन् भवदुर्दिने पथस्खलितं मामवलोक-याच्युत ॥५२॥ न मृषा परमार्थमेव मे शृणु विज्ञापन-मेकमग्रतः ॥ यदि मे न दयिष्यसे ततो दयनीयस्तव नाथ दुर्लभः ॥५३॥ तदहं त्वदृते न नाथवान्मदृते त्वं दयनीय-वान्न च ॥ विधिनिर्मितमेतदन्वयं भगवन् पालय मास्म जीहपः ॥५४॥ वपुरादिषु योऽपि कोऽपि वा गुणतोऽसानि यथा तथाविधः । तदहं तव पादपद्मयोरहमद्यैव मया समर्पितः ॥५५॥ मम नाथ यदस्ति योऽस्म्यहं सकलं तद्धि तवैव माधव ॥ नियतः स्वमिति प्रबुद्धधीरथवा किंनु समर्पयामि ते ॥५६॥ अवबोधितवानिमां यथा मयि नित्यां भवदीयतां स्वयम् ॥ कृपयैवमनन्यभोग्यतां भगवन् भक्ति-मपि प्रयच्छ मे ॥५७॥ तव दास्यसुखैकसंगिनां भवनेष्वस्त्वपि कीटजन्म मे ॥ इतरावसथेषु मा

स्समभूदपि मे जन्म चतुर्मुखात्मना ॥५८॥ सकृत्त्वदाकार-विलोकनाशया तृणीकृतानुत्तमभुक्तिमुक्तिभिः ॥ महात्म-भिर्मामवलोक्य तां नय क्षणोऽपि ते यद्विरहोऽतिदुः सहः ॥५९॥ न देहं न प्राणान्न च सुखमशेषाभिलषितं न चात्मानं नान्यत्किमपि तव शेषत्वविभवात् ॥ बहिर्भूतं नाथ क्षणमपि सहे यातु शतधा विनाशं तत्सत्यं मधुमथन विज्ञापनमिदम् ॥६०॥ दुरन्तस्यानादेरपरिहरणीयस्य महतो विहीनाचारोऽहं नृपशुरशुभस्यास्पदमपि ॥ दया-सिन्धो बन्धो ! निरवधिकवात्सल्यजलधे तव स्मारं स्मारं गुणगणमितीच्छामि गतभीः ॥६१॥ अनीच्छन्नप्येवं यदि पुनरपीच्छन्निव रजस्तवच्छन्नच्छद्मस्तुतिवचनभंगी-मरचयम् ॥ तथापीत्थं रूपं वचनमवलम्ब्यापिकृपया त्वमेवैवं भूतं धरणिधर मे शिक्षय मनः ॥६२॥ पिता त्वं माता त्वं दयिततनयस्त्वं प्रियसुहृत्त्वमेव त्वं मित्रं गुरुरपि गतिश्चापि जगताम् ॥ त्वदीयस्त्वद्भृत्यस्तव परिजनस्त्वद्-गतिरहं प्रपन्नश्चैवं सत्यहमपि तवैवास्मि हि भरः ॥६३॥ जनित्वाहं वंशे महति जगतिख्यातयशसां शुचीनां युक्तानां गुणपुरुषतत्त्वस्थितिविदाम् ॥ निसर्गादेव त्वच्चरणकमलै-कान्तमनसामधोधः पापात्मा शरणदनिमज्जामि तमसि ॥६४

अमर्यादः क्षुद्रश्चलमतिरसूया प्रसवभूः कृतघ्नो दुर्मानी
स्मर परवशो वञ्चनपरः ॥ नृशंसः पापिष्ठः कथमहमितो
दुःखजलधेरपारादुत्तीर्णस्तव परिचरेयं चरणयोः ॥६५॥
रघुवर यदभूस्त्वं तादृशो वायसस्य प्रणत इति दयालुर्यस्य-
चैद्यस्व कृष्ण ॥ प्रतिभवमपराद्धुर्मुग्धसायुज्यदोऽभूर्वद
किमु पदमागस्तस्य तेऽस्ति क्षमायाः ॥६६॥ ननु प्रपन्नः
सकृदेव नाथ तवाहमस्मीति च याचमानः ॥ तवानुकम्प्यः
स्मरतः प्रतिज्ञां मदेकवर्ज्यं किमिदं व्रतं ते ॥६७॥
अकृत्रिमत्वच्चरणारविन्दप्रेमप्रकर्षावधिमात्मवन्तम् । पिता-
महं नाथमुनिं विलोक्य प्रसीद मद्वृत्तमचिन्तयित्वा ॥६८
यत्पदाम्भोरुहध्यानविध्वस्ताशेषकल्मषः ॥ वस्तुतामुपया-
तोऽहं यामुनेयं नमामि तम् ॥६९॥

॥ इति यामुनाचार्यविरचितमालवन्दारस्तोत्रम् सम्पूर्णम् ॥

॥ अथ नारायणाष्टकम् ॥

वात्सल्यादभयप्रदानसमयादार्तार्तिनिर्व्वापणादौदा-र्यादघशोषणादगणितश्रेयः पदप्रापणात् ॥ सेव्यः श्रीपति-रेक एव जगतामेतेऽभवन्साक्षिणः प्रह्लादश्च विभीषणश्च करिराट् पाञ्चाल्यहल्याध्रुवः ॥१॥

प्रह्लादास्ति यदीश्वरो वद हरिः सर्वत्र मे दर्शय स्तंभे चैवमिति ब्रुवन्तमसुरं तत्राविरासीद्धरिः ॥ वक्षस्तस्य विदारयन्निजनखैर्वात्सल्यमापादयन्नार्त्तत्राणपरायणः सः भगवान्नारायणो मे गतिः ॥२॥

श्रीरामोऽत्र विभीषणोऽयमनघो रक्षोभयादागतः सुग्रीवानय पालयैनमधुना पौलस्त्यमेवागतम् ॥ इत्युक्त्वा-ऽभयमस्य सर्वविदितं यो राघवो दत्तवानार्त्तत्राणपरायण स भगवान्नारायणो मे गतिः ॥३॥

नक्रग्रस्तपदं समुद्धृतकरं ब्रह्मादयो भोः सुरा रक्षन्ता-मिति दीनवाक्यकरिणं देवेष्वशक्तेषु यः ॥ मा भैषीरिति तस्य नक्रहनने चक्रायुधः श्रीधरो ह्यार्तत्राणपरायणः स भगवान्नारायणो मे गतिः ॥४॥

भोः कृष्णाच्युत भोः कृपालय हरे भोः पाण्डवानां सखे क्वासि क्वासि सुयोधनाद्यपहृतां भो रक्ष मामातुराम् ॥

इत्युक्तोऽक्षयवस्त्रसंभृततनुर्योऽपालयद्द्रौपदीमार्त्तत्राण-परायणः स भगवान्नारायणो मे गतिः ॥५॥

यत्पादाब्जनखोदकं त्रिजगतां पापौघविध्वंसनं यन्नामामृतपूरकं च पिवतां संसारसंतारकम् ॥ पाषाणोऽपि यदङ्घ्रिपङ्करजसा शापान्मुनेर्मोचितो ह्यार्त्तत्राणपरायणः स भगवान्नारायणो मे गतिः ॥६॥

पित्रा भ्रातरमुत्तमासनगतं ह्यौत्तानपादिर्ध्रुवो दृष्ट्वा तत्सममारुरुक्षुरधिकं मात्राऽवमानं गतः ॥ यं गत्वा शरणं यदाप तपसा हेमाद्रिसिंहासनं ह्यार्त्तत्राणपरायणः स भगवान्नारायणो मे गतिः ॥७॥

आर्त्ता विषण्णाः शिथिलाश्च भीता घोरेषु च व्याधिषु वर्तमानाः ॥ संकीर्त्य नारायणशब्दमात्रं विमुक्तदुःखाः सुखिनो भवन्ति ॥८॥

॥ इति नारायणाष्टकम् सम्पूर्णम् ॥

❋ अथ भवमङ्गलाष्टकम् ❋

श्रीरङ्गं करिशैलमञ्जनगिरौ शेषाद्रिसिंहाचलं श्रीकूर्मं पुरुषोत्तमं च बदरीनारायणं नैमिषम् ॥ श्रीमद्द्वारवती प्रयागमथुरायोध्यागयापुष्करं शालग्राममनिवासिना विजयते रामानुजोऽयंमुनिः ॥१॥

सर्वेषां कृतिनां चरन्ति गुरवः कैङ्कर्यनिष्ठाहरेः श्रीरामानुजयोगिनायकमणिश्रीपादपद्मालयः ॥ भोग्याष्टाक्षरमंत्ररत्नचरमश्लोकानुसन्धायिनो वंद्या भागवतोत्तमाः प्रतिदिनं कुर्वंतु मे मंगलम् ॥२॥

स श्रीमान्परमः पुमानथचतुर्व्यूहावतारस्ततो जाता व्यूहपरंपराः सुगचिताः श्रीकेशवाद्याः पराः ॥ एकाम्भोनिधिशेषभोगशयनन्यग्रोधपत्राश्रयक्षीरोदन्वदनन्ततल्पसुखदाः कुर्वन्तु मे मंगलम् ॥३॥

श्रीरामानुजयोगिपूर्णयमुनावास्तव्यमालाधरानाथःकारितनूजसैन्यपरमः श्रीमांश्च नारायणः । चण्डाद्याः कुमुदादयः परिजना नित्याश्च मुक्ताश्च ये श्रीवैकुण्ठनिवासिनोऽमरवराः कुर्वन्तु मे मंगलम् ॥४॥

मत्स्यः कूर्मवराहमानवहरिश्रीवामनो भार्गवः श्रीरामोबलदेवदेवकिसुतौ कल्की दशैते क्रमात् ॥ अन्तर्याम्यथयोगिनां हृदयगोप्यर्चावताराः शुभाः श्रीरंगादिसमस्तधामनिलयाः कुर्वन्तु मे मंगलम् ॥५॥

श्रीभूमिर्विमलादयो नयसुधापद्माधृताः शक्तयो वेदा वेदवती धरापि च महालक्ष्मीः सुकेशालया ॥ देवी

भार्गवभामिनी जनकजा सा रेवती रुक्मिणी वेदाद्या अभयान्विता दशरमाः कुर्वन्तु मे मंगलम् ॥६॥

शत्रुध्वंसिसुदर्शनं सुखकरं श्रीपाञ्चजन्यः सदा बाणाः शार्ङ्गममर्षहर्षजनकं कौमोदकी नन्दकः ॥ सत्पद्मं मुसलं हलं च परशुर्दिव्यायुधानि प्रभोः सेनाधीशखगेशभोगिपतयः कुर्वन्तु मे मंगलम् ॥७॥

हंसोधर्मनिदर्शनो हरिमुखो यज्ञश्च धन्वन्तरिः पाथोऽजो मिथुनोदितो हरिरलंकारः पृथिव्या पृथुः ॥ आद्यो वेदमुखश्च जन्मनिलयो नारायणो वै विराट् श्वेतद्वीपनिवासिजीवहृदयः कुर्वन्तु नो लंगलम् ॥८॥

विष्वक्सेनमुनिर्ह्यनन्तमुनयः श्रीसंप्रदायादिमा येऽन्ये भूतभविष्यदृश्यसमये श्रीरंगभूभूषणाः ॥ ये वै भागवताः सुखा दशगणा भृत्या नरा वानराः श्वेतद्वीपनिवासिनो नरवराः कुर्वन्तु नो मंगलम् ॥९॥

इत्युक्तं भवमंगलाष्टकमिदं सुश्लोकसंकीर्तनं श्रीमद्भागवतप्रसादजनकं श्रीवेङ्कटेशेन यत् ॥ भक्त्या ये प्रपठन्ति शुद्धमनसः प्रोत्फुल्लहृत्पंकजास्तेषां वाञ्छितमंगलम् प्रकुरुते भक्तिप्रियो माधवः ॥१०॥

रा०

॥ अथ श्रीश्रीस्तवः ॥

स्वस्ति श्रीर्दिशतादशेषजगतां सर्गोपवर्गस्थितीः स्वर्गं दुर्गतिमापवर्गिकपदं सर्वं च कुर्वन् हरिः ॥ यस्या वीक्ष्य मुखं तदिङ्गितपराधीनो विधत्तेऽखिलं क्रीडेयं खलु नान्यथाऽस्य रसदा स्यादैकरस्यात्तया ॥१॥

हे श्रीर्देवि समस्तलोकजननीं त्वां स्तोतुमीहामहे युक्तां भावय भारतीं प्रगुणय प्रेमप्रधानां धियम् ॥ भक्तिं वर्धय नंदयाश्रितमिमं दासं जनं तावकं लक्ष्यं लक्ष्मि कटाक्षवीचिविसृतेस्ते स्याम चामी वयम् ॥२॥

स्तोत्रं नाम किमामनन्ति कवयो यद्यन्यदीयान् गुणानन्यत्र त्वसतोऽधिरोप्य भणितिः सा तर्हि वन्ध्या-त्वयि ॥ सम्यक्सत्यगुणाभिवर्णनमथो ब्रूयुः कथं तादृशी वाग् वाचस्पतिनापि शक्यरचना त्वत्सद्गुणार्णो निधौ॥३

ये वाचां मनसां च दुर्ग्रहतया ख्याता गुणास्ताव-कास्तानेव प्रति साम्बुजिह्ममुदिता यन्मामिका भारती ॥ हास्यं तत्तु न मन्महे नहि चकोर्यैकाखिलां चन्द्रिकां नालं पातुमिति प्रगृह्य रसनामासीत सत्यां तृषि ॥४॥

क्षोदीयानपि दुष्टबुद्धिरपि निःस्नेहोऽप्यनीहोऽपि

कीर्तिं देवि लिहन्नहं न च विभेम्यज्ञो न जिह्रेमि च ॥
दुष्येत्सा तु न तावता नहि शुनालीढाऽपि भागीरथी दुष्ये-
च्छ्वापि न लज्जते न च विभेत्यार्तिस्तु शाम्येच्छुनः ॥५॥

ऐश्वर्यं महदेव वाल्पमथवा दृश्येत पुंसां हि यत्तल्ल-
क्ष्म्याः समुदीक्षणात्तव यतः सार्वत्रिकं वर्त्तते ॥ तेनैतेन
न विस्मयेमहि जगन्नाथोऽपि नारायणो धन्यं मन्यत
ईक्षणात्तव यतः स्वात्मानमात्मेश्वरः ॥६॥

ऐश्वर्यं यदशेषपुंसि यदिदं सौन्दर्य्यलावण्ययोरूपं यच्च
हि मंगलं किमपि यल्लोके सदित्युच्यते तत्सर्वं त्वदधीनमेव
हि यतः श्रीरित्यभेदेन वा यद्वा श्रिमदितिदृशेन वचसा
देवि प्रथामश्नुते ॥७॥

देवि त्वन्महिमावधिर्न हरिणा नापि त्वया ज्ञायते
यद्यप्येवमथापि नैव युवयोः सर्वज्ञता हीयते ॥ यन्नास्त्येव
तदज्ञतामनुगुणां सर्वज्ञताया विदुर्व्योमाम्भोजमिदन्तया खलु
विदन् भ्रान्तोऽयमित्युच्यते ॥८॥

लोके वनस्पतिबृहस्पतितारतम्यं यस्याः कटाक्षपरि-
णामसुदाहरंति ॥ सा भारती भगवती तु यदीयदासी तां
देवमहिषीं श्रियमाश्रयामः ॥९॥

यस्याः कटाक्षमृदुवीक्षणवीक्षणेन सद्यस्समुल्लसित-
पल्लवमुल्ललास ॥ विश्वं विपर्ययसमुत्थविपर्ययं प्राक्
तान्देवदेवमहिषीं श्रियमाश्रयामः ॥१०॥

॥ अथ पञ्चायुधस्तोत्रम् ॥

स्फुरत्सहस्रारशिखातितीव्रं सुदर्शनं भास्करकोटितु-
ल्यम् ॥ सुरद्विषां प्राणविनाशिविष्णोश्चक्रं सदाहं शरणं
प्रपद्ये ॥१॥ विष्णोर्मुखोत्थानिलपूरितस्य यस्य ध्वनिर्दा-
नवदर्प्पहन्ता ॥ तं पाञ्चजन्यं शशिकोटिशुभ्रं शंखं सदाहं
शरणं प्रपद्ये ॥२॥ हिरण्मयीं मेरुसमानतारां कौमोदकीं
दैत्यकुलैकहंत्रीम् ॥ वैकुण्ठवामाग्रकराभिमृष्टां गदां सदाहं
शरणं प्रपद्ये ॥३॥ रक्षोऽसुराणां कठिनोग्रकण्ठच्छेदक्षर-
च्छोणित दिग्धधारम् ॥ तं नन्दकं नाम हरेः प्रदीप्तं
खड्गं सदाहं शरणं प्रपद्ये ॥४॥ यज्ज्यानिनादश्रवणात्सु-
राणां चेतांसि निर्मुक्तभयानि सद्यः ॥ भवन्ति दैत्याशनि-
बाणवर्षिशार्ङ्गं सदाहं शरणं प्रपद्ये ॥५॥ इमं हरेः पञ्चम-
हायुधानां स्तवं पठेद्योऽनुदिनं प्रभाते ॥ समस्तदु

सुधानिधिमिव स्वैरस्वकृतोदग्रविग्रहम् ॥
प्रसन्नार्कप्रतीकाशप्रकाशपरिवेष्टितम् ॥४॥
पार्श्वतः पाणिपद्माभ्यां परिगृह्य भवत्प्रियौ ॥
विन्यस्यन्तं शनैरंघ्री मृदुलौ मेदिनीतले ॥५॥
अम्लानकोमलाकारमाताम्रविमलाम्बरम् ॥
आपीनविपुलोरस्कमाजानुभुजभूषणम् ॥६॥
मृणालतन्तुसन्तानसंस्थानधवलत्विषा ॥
शोभितं यज्ञसूत्रेण नाभिविम्बसनाभिना ॥७॥
अम्भोजवीजमालाभिरभिजातभुजांतरम् ॥
ऊर्ध्वपुण्ड्रैरुपश्लिष्टमुचितस्थानलक्षणैः ॥८॥
काश्मीरकेशरस्तोमकडारस्निग्धरोचिषा ॥
कौशेयेन समिंधानं स्कन्धमूलावलंबिना ॥९॥
मंत्ररत्नानुसन्धानसन्ततस्फुरिताधरम् ॥
तदर्थतत्त्वनिध्यानसन्नद्धपुलकोद्गमम् ॥१०॥
स्मयमानमुखाम्भोजे दयमानदृगञ्चलम् ॥
मयिप्रसादप्रवणं मधुरोदारभाषणम् ॥११॥
त्वत्लाभात्परं किञ्चिदन्यन्नास्तीति निश्चयात् ॥
अङ्गीकर्तुमिवप्राप्तमकिञ्चनमिमं जनम् ॥१२॥